विशाल इण्डिया

गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

सच्चाई की राह पर!

वर्ष : 13 | अंक : 78 | गौतमबुद्धनगर, शनिवार 17 फरवरी 2024 | पृष्ठ : 08 मूल्य : 02 रूपये | आरएनआई नं. UPHIN/2014/55236

P- 3

ग्रेटर नोएडा में बिल्डर प्लॉट्स की होगी बड़े

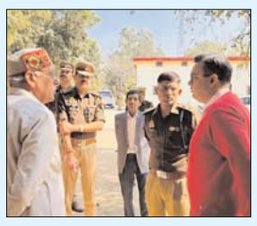

P- 4

डीएम एसपी ने पुलिस भर्ती परीक्षा के दृष्टिगत परीक्षा केन्द्रों का किया

P- 5

हट गया पुतिन के रास्ते का कांटा... नेता नवलनी की मौत

P- 6

विलियमसन ने टेस्ट में सबसे तेजी से 32 शतक का रिकार्ड बनाया

हैप्पी मॉर्निंग

एक शराबी बीमार हुआ तो डॉक्टर के पास गया और बोला डॉक्टर साहब मैं कुछ बीमार रहने लगा हूं
डॉक्टर बोला- तुम्हारा लिवर फूल गया है.
शराबी- इसका मतलब यह हुआ कि अब इसमें और ज्यादा दारू आ सकती है

शायरी

भ्रष्टाचार का काल छाया, देश में हैं अंधेरे,
इंसानियत की राह से हटा,
नहीं रौशनी की उम्मीद यहाँ।

अर्थसार

सेंसेक्स:
72,426.64
+376.26 (0.52%)
निफ्टी:
22,040.70
+129.95

मौसम

अधिकतम : 24 डिग्री से0
न्यूनतम : 09 डिग्री से0
सूर्योदय रविवार : 7 : 06
सूर्यास्त शनिवार : 6 : 14

दिल्ली की पेंट फैक्ट्री में आग, 11 लोगों की मौत

4 घायल, साढ़े 3 घंटे में आग बुझाई गई; केमिकल की वजह से ब्लास्ट की आशंका

नई दिल्ली। दिल्ली के अलीपुर में दयाल मार्केट में मौजूद एक पेंट फैक्ट्री में गुरुवार 15 फरवरी को आग लग गई। देर रात तक हादसे में 7 लोगों के मारे जाने की खबर थी। शुक्रवार सुबह 8 मृतकों की संख्या 11 हो गई। 4 लोग घायल हैं, जिन्हें राजा हरिश्चंद्र अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

आग लगने की सूचना मिलने पर फायर ब्रिगेड की 22 गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। घटना शाम करीब 5:30 बजे की है। रात 9 बजे आग पर काबू पाया गया। पुलिस ने बताया कि फैक्ट्री में धमाके के बाद आग लगी। आग की लपटें

इतनी तेज थीं, आसपास के कुछ घरों को भी नुकसान पहुंचा। अधिकारियों का मानना है कि फैक्ट्री में रखे केमिकल की वजह से ब्लास्ट हुआ।

घटनास्थल पर मौजूद एक प्रत्यक्षदर्शी सुमित भारद्वाज ने बताया- घटना गुरुवार शाम करीब 5.30 बजे की है। जैसे ही धमाका हुआ तो लोग बाहर इकट्ठा हुए। हमने बाल्टी से पानी डालकर आग बुझाने की कोशिश की। फिर फायर ब्रिगेड को कॉल किया। लेकिन आग नहीं बुझ रही थी। फायर ब्रिगेड की गाड़ियों ने तीन रास्तों से आग बुझाने की कोशिश की। फैक्ट्री करीब 8-10 साल पुरानी है।

हादसे के बाद घटनास्थल पहुंचे सुनील ठाकुर ने रोते हुए बताया, मेरा भाई भी पेंट फैक्ट्री में काम करता था। उसका नाम अनिल ठाकुर है। उसका कुछ पता नहीं चल रहा। शाम 5 बजे से फोन भी स्विच ऑफ आ रहा है। कोई कुछ भी बताने को तैयार नहीं है।

किसान आंदोलन : एक किसान और एसआई की मौत

चौथा दिन, शंभू बॉर्डर पर हंगामा, आज पंजाब के सभी टोल फ्री, हरियाणा में ट्रैक्टर मार्च

एजेंसी

अंबाला। पंजाब के किसानों के दिल्ली कूच का शुक्रवार (16 फरवरी) को चौथा दिन था। किसान अभी शंभू बॉर्डर पर डटे हुए हैं। हरियाणा पुलिस और पैरामिलिट्री फोर्स ने बैरिकेडिंग और आंसू गैस के गोले दागकर उन्हें आगे बढ़ने से रोका गया।

शुक्रवार दोपहर करीब 3 बजे किसानों ने बैरिकेडिंग की तरफ बढ़ने की कोशिश की। यह देख हरियाणा पुलिस ने उन पर आंसू गैस के गोले दागे।

गोले फटने से कई किसानों को चोटें आई हैं। किसानों के भारत बंद को पंजाब और हरियाणा में पूरा समर्थन मिला।

दोनों राज्यों में रोडवेज कर्मचारी भी आंदोलन के समर्थन में आ गए। जिस वजह से सरकारी बसें नहीं चलीं। पंजाब में प्राइवेट बसें भी बंद रहीं। राजस्थान में हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में बंद का असर रहा। हिमाचल में भी बंद का असर दिखा।

हरियाणा में भारतीय किसान यूनियन (चढ़ूनी) के नेता गुरनाम चढ़ूनी की कॉल पर किसानों से 12 से 3 बजे तक सब टोल नाके फ्री कराए। कल वे हरियाणा की सभी तहसीलों पर ट्रैक्टर मार्च निकालेंगे। वहीं शुक्रवार सुबह आंदोलन में शामिल पंजाब के गुरदासपुर के किसान ज्ञान सिंह की मौत हो गई।

उन्हें शंभू बॉर्डर पर ट्रॉली में ही हार्ट अटैक आ गया। शाम को उनका शव शंभू बॉर्डर पर लाया गया। जहां किसान नेताओं ने उन्हें श्रद्धांजलि दी।

आंदोलन की ड्यूटी में तैनात अंबाला जीआरपी में तैनात सब इंस्पेक्टर हीरालाल की मौत हो गई। इसकी वजह आंसू गैस के गोले से दम घुटना बताई जा रही है।

हरियाणा पुलिस ने किसान नेता अभिमन्यु कोहाड़ और उनके 5 साथियों पर एफआईआर दर्ज की है। उन पर पंजाब-हरियाणा के खनौरी बॉर्डर पर पुलिस पर हमला करने का आरोप लगा है। शुक्रवार शाम को पंजाब के सबसे बड़े किसान संगठन भारतीय किसान यूनियन (उगराहां) के प्रधान जोगिंदर सिंह उगराहां ने आंदोलन में शामिल होने का ऐलान कर दिया।

उन्होंने कहा कि कल (शनिवार) से 2 दिन के लिए पंजाब के सभी टोल फ्री कराए जाएंगे। इसके अलावा भाजपा नेता पूर्व सीएम कैप्टन अमरिंदर सिंह, पंजाब प्रधान सुनील जाखड़ और केवल ढिल्लो के घर का घेराव करेंगे।

तीसरी बातचीत बेनतीजा रही, आज फिर मीटिंग होगी

इससे पहले गुरुवार 15 फरवरी को चंडीगढ़ में किसान नेताओं और केंद्रीय मंत्रियों के बीच तीसरे दौर की बातचीत भी बेनतीजा रही। इसमें सरकार ने एमएसपी पर कानून बनाने के लिए कमेटी बनाने का प्रस्ताव दिया। जिसमें किसान और सरकार दोनों के प्रतिनिधि होंगे। मगर, किसान नेता एमएसपी गारंटी पर अड़े रहे। मीटिंग में केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा, पीयूष गोयल, नित्यानंद राय के साथ पंजाब के सीएम भगवंत मान भी मौजूद रहे। अब रविवार 18 फरवरी शाम 6 बजे फिर से बैठक होगी। तब तक दोनों पक्षों ने शांति बनाए रखने का आश्वासन दिया है।

मोदी सरकार चाहती है कि युवा ठेके पर काम करें : राहुल गांधी

चंदौली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने शुक्रवार को कहा कि युवाओं को सेना, रेलवे और पब्लिक सेक्टर में नौकरी नहीं मिल रही, क्योंकि केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार चाहती है कि युवा ठेके पर ही काम करें।

बिहार से चंदौली के रास्ते यात्रा उत्तर प्रदेश पहुंची भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान एक जनसभा को संबोधित करते हुये श्री गांधी ने अग्निपथ योजना को युवाओं के साथ धोखा बताते हुए कहा कि अग्निवीर को ना कैंटीन सुविधा मिलेगी, ना पेंशन मिलेगी और ना शहीद का दर्जा मिलेगा। यह युवाओं के साथ धोखा है। मोदी सरकार अग्निपथ योजना

इसलिए लाई, ताकि देश के रक्षा बजट से पैसा हमारे जवानों की रक्षा, उनकी ट्रेनिंग और पेंशन में न जाए।

उन्होने कहा कि मोदी सरकार चाहती है कि सब लोग ठेके के मजदूर बनें। युवाओं को सेना, रेलवे और पब्लिक सेक्टर में नौकरी नहीं मिल रही, क्योंकि मोदी सरकार चाहती है कि युवा ठेके पर ही काम करें। केंद्र में इंडिया की सरकार आने पर पूरे हिंदुस्तान में रिक्त पड़े सरकारी पदों पर भर्ती की जाएगी।

गांधी ने कहा कि देश में पिछड़ों, दलितों और आदिवासियों की आबादी 73 प्रतिशत है। मगर इन वर्गों की कहीं भी भागीदारी नहीं है। इन वर्गों को कुछ नहीं मिल रहा है। ये अन्याय है। जाति जनगणना से पता चलेगा कि देश में कितने पिछड़े, दलित और आदिवासी हैं। किस वर्ग के पास कितना धन है। जाति जनगणना देश का एक्सरे है। इससे पता लग जाएगा कि सोने की चिड़िया का धन किसके हाथ में है। केंद्र में इंडिया की सरकार आने पर पूरे देश में जाति जनगणना कराई जाएगी।

आरबीआई ने पेटीएम बैंक की डेडलाइन 15 मार्च तक बढ़ाई

मुंबई। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया यानी आरबीआई ने पेटीएम पेमेंट बैंक में डिपॉजिट और अन्य ट्रांजैक्शंस की डेडलाइन को 15 मार्च तक बढ़ा दिया है। आज यानी शुक्रवार 16 फरवरी को आरबीआई ने इसे लेकर एक सर्कुलर जारी किया है। पिछले कुछ दिनों में सेंट्रल बैंक को लोगों के बहुत सारे सवाल भी मिले थे। उसके आधार पर, आरबीआई ने एक FAQ भी जारी किया है। इससे पहले 31 जनवरी को जारी सर्कुलर में आरबीआई ने कहा था कि 29 फरवरी के बाद पेटीएम पेमेंट बैंक के अकाउंट में पैसा जमा नहीं किया जा सकेगा। इस बैंक के जरिए वॉलेट, प्रीपेड सर्विसेज, फास्टैग और दूसरी सर्विसेज में पैसा नहीं डाला जा सकेगा।

हत्या

कुदाल से किया ताबड़तोड़ प्रहार, 3 वर्षीय बेटे पर नहीं आया रहम

सीतापुर में पति ने पत्नी और मासूम को मौत के घाट उतारा

सीतापुर। सीतापुर में पति ने कुदाल से ताबड़तोड़ प्रहार कर पत्नी और तीन ताल के मासूम बच्चे को मौत के घाट उतार दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। पत्नी और मासूम की मौत से परिवार में कोहराम मचा हुआ है।

कुदाल से प्रहार कर हत्या

घटना इमलिया सुल्तानपुर थाना इलाके की है। यहां पति ने पत्नी और मासूम को मौत के घाट उतार दिया। जानकारी के अनुसार, थाना क्षेत्र के ग्राम पकरिया में प्रदीप गिरी पुत्र वीरबली अपनी पत्नी भूरा देवी (35) और बेटे आरुष (3) के साथ रहते थे। गुरुवार की देर रात पति और पत्नी में किसी बात को लेकर आपसी झगड़ा होने लगा। इसी झगड़े में प्रदीप ने अपनी पत्नी और मासूम बेटे आरुष कुदाल से ताबड़तोड़ कई प्रहार कर दिया। हमले में पत्नी और मासूम दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए।

लखनऊ ले जाते समय रास्ते में मासूम की मौत

चीख- पुकार की आवाज सुनकर अन्य परिजन वहां पहुंच गए और आनन- फानन में घायलों को एम्बुलेंस से जिला अस्पताल ले गए। दोनों की हालात नाजुक देखते हुए

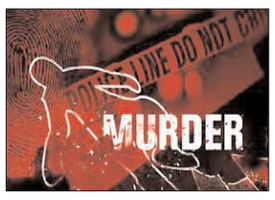

डॉक्टरों ने उन्हें लखनऊ ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया। लखनऊ ले जाते समय रास्ते में मासूम की मौत हो गई, जबकि ट्रामा सेंटर में उपचार के दौरान महिला की भी मौत हो गई।

पति हिरासत में

घटना के बाद इमलिया सुल्तानपुर पुलिस व फोरेंसिक टीम घटनास्थल पहुंचकर मामले की जांच- पड़ताल की। घटना के बाद इमलिया सुल्तानपुर पुलिस व फोरेंसिक टीम घटनास्थल पहुंचकर मामले की जांच- पड़ताल की। परिजनों के साथ एंबुलेंस में गए आरोपी पति को लखनऊ पुलिस ने हिरासत में लेकर मामले की पूछताछ कर रही है। मृतका के पिता तोता गिरी ने बताया कि मेरी बेटी और दामाद में रात 12 बजे झगड़ा हुआ। इसके बाद दामाद प्रदीप ने बेटी के सिर पर कुदाल मार दी। जिससे वहां वहीं गिर पड़ी। उनकी गोद में बच्चा भी था। उसके भी कुदाल लग गई है। जिससे वह भी घायल हो गया। प्रदीर ने ही हम लोगों ने सूचना दी। इसके बाद हम लोग मौके पर पहुंचे। बेटी और नाती को अस्पताल लेकर गए। जहां से डॉक्टरों ने दोनों को लखनऊ रेफर कर दिया। नाती ने सिधौली में दम तोड़ दिया। इन लोगों में अक्सर झगड़ा होता रहता था।

पति के खिलाफ केस दर्ज

सूचना पर पहुंची पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजकर आलाकत्ल को कब्जे में लेकर छानबीन शुरू कर दी है। प्रभारी निरीक्षक प्रभातेश कुमार का कहना है कि मृतक के परिजनों की तहरीर के आधार पर केस दर्ज कर लिया गया है।

चुनाव में काले धन के इस्तेमाल की बढ़ी आशंका के मद्देनजर चुनाव आयोग सतर्क

एजेंसी

नई दिल्ली। चुनावी बॉन्ड को सुप्रीम कोर्ट की तरफ से असंवैधानिक करार दिए जाने के बाद अब सत्ता के गलियारे में इस बार के चुनाव में काले धन का इस्तेमाल बढ़ने की चर्चा शुरू हो गई है। अटकल लगाई जा रही है कि वर्ष 2017 से पहले जिस प्रकार से चुनाव के दौरान काले धन का इस्तेमाल होता था, वह व्यवस्था फिर से वापस आ सकती है।

दरअसल पूर्व की तरह चंदा का 80-90 फीसद फिर से अनाम स्रोत से ही आएगा। सूत्रों के मुताबिक चुनावी बॉन्ड लाने के पीछे सरकार का मुख्य उद्देश्य था कि चुनाव में खर्च होने वाला पैसा काला धन न हो। लोग बॉन्ड खरीदकर पार्टियों को देते थे। वर्ष 2017 से पहले चुनाव में उम्मीदवार की तरफ से कोई दूसरा या तीसरा व्यक्ति उनके विज्ञापन से लेकर अन्य खर्च का जिम्मा ले लेता था और अपने काले धन का इस्तेमाल उसमें करता था। फंडिंग करने वालों को कई बार स्थानीय स्तर उन नेताओं से खतरा भी मोल लेना पड़ता था जिनके लिए वे खर्च नहीं करते थे। चुनावी बॉन्ड के जरिए फंड देने वालों के नाम की गोपनीयता से उन्हें स्थानीय स्तर पर किसी दूसरे नेता या पार्टी से कोई खतरा नहीं रहता था। चुनावी बॉन्ड से फंड करने वाले सीधे तौर पर राजनीतिक पार्टी को पैसा दे रहे थे न कि किसी किसी नेता को। इसलिए दान करने वाले सुरक्षित थे।

मणिपुर के चुराचांदपुर में हिंसा, 2 की मौत, कई घायल

400 लोगों ने एसपी ऑफिस पर हमला किया; 5 दिन के लिए इंटरनेट बंद

इंफाल। मणिपुर के चुराचांदपुर जिले में हिंसक भीड़ ने गुरुवार रात उपायुक्त (डीसी), पुलिस अधीक्षक (एसपी) और अन्य सरकारी कार्यालयों पर हमला किया और उन्हें जलाने की कोशिश की, जिसके कारण एक व्यक्ति की मौत हो गई। ताजा हिंसा में दो लोगों की जान चली गई, जबकि कम से कम 25 लोगों के घायल होने की खबर है।

स्थिति को नियंत्रित करने के लिए मणिपुर सरकार ने जिले में पांच दिनों के लिए इंटरनेट सेवाओं को निलंबित करने का आदेश दिया। मणिपुर पुलिस ने संदिग्ध कुकी उग्रवादियों के साथ काम करने और मैतेई ग्रामीणों पर हमला करने के आरोप में चुराचांदपुर थाने में तैनात सियामलालपॉल नामक हेड कांस्टेबल को निलंबित कर दिया। गौरतलब है कि सोशल मीडिया में एक वीडियो वायरल हुआ है, जिसमें उसने कुकी उग्रवादियों के साथ मिलकर हमला करते हुए दिखाई दे रहा है।

पुलिस ने कहा कि निलंबन आदेश

को रद्द करने की मांग करते हुए भीड़ गुरुवार रात को एकत्र हुई। भीड़ हिंसक हो गई और डीसी तथा एसपी कार्यालयों में सरकारी बुनियादी ढांचे को जला दिया। पुलिस ने भीड़ को नियंत्रित करने के लिए आंसू गैस के गोले छोड़े। पुलिस ने कहा कि रैपिड एक्शन फोर्स (आरएएफ) और पुलिस ने आंसू गैस के गोले दागे। गतिरोध में एक व्यक्ति की मौत हो गई। मणिपुर पुलिस ने एक्स पर पोस्ट में कहा, लगभग 300-400 की संख्या में आई भीड़ ने आज एसपी, सीसीपी के कार्यालय पर धावा बोलने, पथराव आदि करने का प्रयास किया। आरएएफ सहित एसएफ (सुरक्षा बल) आंसू गैस के गोले दागकर उचित जवाब दिया।

उल्लेखनीय है कि मणिपुर 03 मई, 2023 को कुकी समूदाय के लोगों की हिंसक भीड़ ने सरकारी कार्यालयों को जला दिया और दूसरे जातीय समूह के लोगों पर हमला किया। राज्य में हिंसा के कारण अब तक 60000 से अधिक लोग विस्थापित हुए हैं और 200 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है।

पारदर्शिता के हक में सुप्रीम कोर्ट का फैसला

इस योजना के तहत आम लोगों को यह पता नहीं चल पाता था कि किसने कितने रुपए के बांड खरीदे और किस पार्टी को दिए।

चुनावी बांड के रूप में अलग-अलग स्त्रोतों से धन लेने के मसले पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला स्वागतयोग्य है और लोकतंत्र बचाने के लिहाज से इसे उम्मीद की एक किरण के तौर पर देखा जा सकता है। यों चंदा लेने के नाम पर चल रही इस व्यवस्था पर तमाम सवाल उठते रहे और इस पर रोक लगाने की मांग भी होती रही।

साथ ही इसकी संवैधानिकता के संदर्भ में भी स्थिति स्पष्ट किए जाने की जरूरत महसूस की जा रही थी। अब सर्वोच्च न्यायालय ने साफ तौर पर चुनावी बांड की व्यवस्था को असंवैधानिक बताते हुए रद्द कर दिया है। अदालत ने यह व्यवस्था दी है कि चुनावी बांड को अज्ञात रखना सूचना के अधिकार और अनुच्छेद 19(1)(ए) का उल्लंघन है और इसके सहारे राजनीतिक पार्टियों को आर्थिक मदद से उसके बदले में कुछ और प्रबंध करने की व्यवस्था को बढ़ावा मिल सकता है।

पांच न्यायाधीशों की पीठ में सर्वसम्मति से अपने फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि भारतीय स्टेट बैंक चुनाव आयोग को जानकारी मुहैया कराएगा और आयोग इस जानकारी को इकतीस मार्च तक वेबसाइट पर प्रकाशित करेगा।

दरअसल, एक विचित्र तर्क यह भी दिया जा रहा था कि चुनावी बांड की व्यवस्था के जरिए भ्रष्ट तरीके से जमा किए जाने वाले धन पर काबू पाया जा सकता है। जबकि इसमें जिस स्तर पर पारदर्शिता की अनदेखी की जाती रही, वह अपने आप में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने का एक परोक्ष तरीका रहा है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान चलाने वाली ज्यादातर पार्टियों को भी इससे कोई गुरेज नहीं था कि चंदे के रूप में धन का गोपनीय तरीके से लेनदेन हो।

गौरतलब है कि इस योजना के तहत आम लोगों को यह पता नहीं चल पाता था कि किसने कितने रुपए के बांड खरीदे और किस पार्टी को दिए। हालांकि संबंधित बैंक के पास इसका पूरा ब्योरा होता था कि कितने बांड किसने खरीदा और किस पार्टी को दान में दिया।

ये सवाल भी उठे कि चुनावी बांड के जरिए चंदा देने वाले की पहचान चूंकि गुप्त रखी गई है, इसलिए इससे भ्रष्ट तौर-तरीकों से हासिल धन को बढ़ावा मिल सकता है। इसकी एक आलोचना यह भी थी कि यह योजना बड़े कारपोरेट घरानों को उनकी पहचान बताए बिना पैसे दान करने में मदद के लिए बनाई गई थी।

विडंबना यह है कि भारतीय राजनीति में चुनावी पारदर्शिता की मांग तो अक्सर की जाती है, मगर इसके लिए जरूरी कारकों को सुनिश्चित करने को लेकर गंभीरता नहीं दिखती है। हैरानी की बात यह भी रही कि इस क्रम में सूचना के अधिकार कानून को भी दरकिनार कर दिया गया था। मगर सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट रूप से चुनावी बांड की व्यवस्था को सूचना के अधिकार कानून का भी उल्लंघन माना।

इस बात की आशंका निराधार नहीं रही है कि बड़ी कारपोरेट कंपनियां किसी पार्टी को मदद के तौर पर धन देने के लिए किस तरह की अघोषित सुविधाओं की मांग कर सकती हैं और ऐसे में चुनावी बांड के जरिए धन मुहैया कराने का नियम किसके लिए सबसे ज्यादा फायदेमंद हो सकता है। इसका सीधा असर लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर पड़ सकता है।

अब लोकसभा चुनाव के पहले पारदर्शिता सुनिश्चित करने और भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के लिहाज से देखें तो सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को ऐतिहासिक महत्त्व का और याद रखने लायक कहा जा सकता है।

समान नागरिक संहिता प्रगतिशील और न्यायपूर्ण समाज की दिशा का बड़ा कदम है

अवधेश कुमार

उत्तराखंड सरकार द्वारा कॉमन सिविल कोड या समान नागरिक संहिता विधेयक पारित करना कायदे से ऐतिहासिक घटना मानी जानी चाहिए। गोवा में समान नागरिक संहिता की पृष्ठभूमि तथा प्रकृति अलग है। संविधान की स्वीकृति के समय से राष्ट्रीय स्तर पर जिस समान नागरिक संहिता की मांग की जा रही थी उस दिशा में कदम बढ़ाने वाला उत्तराखंड पहला राज्य बना है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसके उत्तराधिकारी सत्तारूढ़ भाजपा, समान नागरिक संहिता की बात अवश्य करते थे किंतु उसकी रूपरेखा सामने नहीं थी। पहली बार भाजपा की एक राज्य सरकार ने समान नागरिक संहिता का प्रारूप रख दिया है। इसके बाद अन्य भाजपा शासित राज्य और केंद्र द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर समान नागरिक संहिता पारित कर लागू करने की संभावना बलवती हुई है।

विरोधियों की बात मानें तो यह भाजपा द्वारा अपना एजेंडा लागू करना है जिसका मूल उद्देश्य एक धर्म और उसकी मान्यताओं के अनुरूप समाज और व्यवस्था का निर्माण है। भाजपा के एजेंडा की बात समझ में आती है, पर इसे किसी रीलिजन, पंथ या मजहब को जोड़ने जैसे आरोप किसी दृष्टिकोण से सत्यापित नहीं होते। कुल 192 पृष्ठ और 392 धाराओं वाली इस संहिता में कहीं नहीं लिखा गया है कि फलां रीलिजन या पंथ के लोग ऐसा नहीं कर सकते या कर सकते हैं। किसी भी धार्मिक, पंथिक, मजहबी, सांस्कृतिक मान्यताओं ,परंपराओं ,रीति -रिवाजों पर इसका असर नहीं होगा। इनमें ऐसा कोई प्रावधान नहीं जिससे खान-पान, पूजा - पाठ , इबादत, वेशभूषा, रहन - सहन पर कोई प्रभाव पड़े। इसी तरह कोई किस तरीके से शादी करे, शादी- विवाह- निकाह कौन कराए इसके प्रावधान नहीं है। कहने का तात्पर्य कि समान नागरिक संहिता को लेकर अभी तक किया गया प्रचार झूठा साबित हुआ है कि इससे हिंदुओं के अलावा दूसरे रिलिजन के लोग अपनी परंपरा, रीति - रिवाज के अनुसार शादी - विवाह या अन्य कर्मकांड नहीं कर पाएंगे।

वास्तव में यह प्रगतिशील व्यवस्था और समाज निर्माण की दिशा का बड़ा कदम है। कोई प्रगतिशील व्यवस्था किसी की धार्मिक- सांस्कृतिक मान्यताओं ,परंपराओं और रीति-रिवाजों को प्रतिबंधित करने या उन पर अंकुश लगाने जैसा विधान स्वीकार नहीं कर सकती। ऐसी कट्टरवादी संकीर्ण सोच के लिए सभ्य समाज में स्थान नहीं हो सकता। इसलिए मुस्लिम संगठनों, मजहबी नेताओं, या राजनीतिक दलों का विरोध केवल विरोध के लिए है। विरोधियों को परंपरागत दुराग्रह से बाहर आकर संहिता से वैसे प्रावधान सामने लाने चाहिए जिनसे वाकई संविधान प्रदत्त धार्मिक अधिकारों पर आघात किया गया हो। सारे विरोध और आरोप तबके हैं जब सामने ड्राफ्ट नहीं था। अब तो बात केवल प्रावधानों पर होनी चाहिए।

समान नागरिक संहिता जीवन के केवल पांच क्षेत्रों- विवाह, तलाक ,गुजारा भत्ता, उत्तराधिकार और गोद लेना या दत्तकग्रहण के लिए है। उत्तराखंड समान नागरिक संहिता के चार खंड हैं, विवाह और विवाह विच्छेद या तलाक, उत्तराधिकार, सहवासी संबंध या लीव इन रिलेशनशिप और विविध। इसमें विवाह के लिए लड़कियों की न्यूनतम आयु 18 व लड़के की न्यूनतम 21 वर्ष रखी गई है तो बहु विवाह व बाल विवाह का निषेध है। सगे रिश्तेदारों से संबंध निषेध तो है पर यह उन पर लागू नहीं होगा जिनकी प्रथा या रूढ़ियां ऐसे संबंधों में विवाह की अनुमति देती है। इन सबसे किसका विरोध होगा और क्यों?

हम जन्म और मृत्यु का पंजीकरण कराते हैं तो विवाह के पंजीकरण की अनिवार्यता क्यों नहीं होनी चाहिए? इसके ज्यादातर प्रावधान आपको सभी धर्म की महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता पर आधारित न्यायपूर्ण प्रगतिशील समाज के निर्माण का ही संदेश देते हैं। उदाहरण के लिए पुरुष और महिला दोनों को तलाक के समान अधिकार होंगे तो पति या पत्नी में से किसी के जीवित रहने पर दूसरे विवाह की अनुमति नहीं होगी और महिला के द्वारा विवाह में कोई शर्त नहीं होगी। किसी को एक से अधिक विवाह करने का उन्माद हो या पुरुषों के समान महिलाओं को तलाक के अधिकार से समस्या तो उनको समान नागरिक संहिता से समस्या होगी।

तलाक की याचिका लंबित रहने पर भरण पोषण और बच्चों की अभिरक्षा से संबंधित प्रावधानों पर उन्हें ही आपत्ति हो सकती है जो सामाजिक न्याय नहीं चाहते। धार्मिक मान्यताओं से परे किसी व्यक्ति को पुनर्विवाह या तलाक के मामले में स्वच्छंदता नहीं दी जा सकती।

समान नागरिक संहिता की प्रगतिशील प्रकृति का एक प्रमाण संपत्ति में पुरुषों के समान महिलाओं को समान अधिकार दिया जाना है। इससे किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि किसी भी परिवार के जीवित बच्चे, पुत्र अथवा पुत्री संपत्ति में बराबर के अधिकारी होंगे।

हालांकि लिव इन रिलेशनशिप संबंधित प्रावधानों से भाजपा एवं संघ परिवार के अंदर थोड़ी असहजता भी महसूस हुई है। लिव-इन रिलेशनशिप को पंजीकरण कराने और न करने पर दंड तथा उस अवधि में पैदा होने वाले बच्चों को वैध संतान की मान्यता या पुरुष द्वारा लिव इन की महिला को छोड़ने पर महिला को भरण पोषण की मांग के अधिकार से आशंका पैदा हुई है कि ऐसे संबंध विस्तारित हो सकते हैं। समाज और परिवार के मान्य बंधन कायम रहे इस दृष्टि से विवाह के समान ही संबंधों पर लिविंग में रहने की अनुमति नहीं दी गई है। हां जहां की रुढ़ियां या प्रथाएं ऐसे संबंधों में विवाह की अनुमति देते हैं उन पर लागू नहीं होगा पर ये रूढ़ियां और प्रथाएं लोक नीति और नैतिकता के विपरीत नहीं होने चाहिए।

हाल के वर्षों में देखा गया है की परिवार और रिश्तेदारी के ऐसे संबंधों में लिव इन या शादी के मामले बढ़े हैं जिनको मानता नहीं थी और इससे समस्याएं पैदा हुई है। परिवार व्यवस्था की मर्यादा को बनाए रखने के लिए यह प्रावधान आवश्यक है। वैसे लिव इन प्रावधान भी महिलाओं के पक्ष में हैं। लव जिहाद की बढ़ती घटनाओं की दृष्टि से ऐसे कानून की मांग की जा रही थी जिनकी शिकार लड़कियों और महिलाओं तथा उनसे पैदा हुए बच्चों को सुरक्षा और संरक्षण प्राप्त हो। पर इसके खतरों को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

कुल मिलाकर समान नागरिक संहिता स्वतंत्रता के बाद समाज के सभी अंगों पुरुष स्त्री बच्चों के लिए सामाजिक न्याय सुनिश्चित करती है। यह प्रगतिशील लोकतांत्रिक और परस्पर सम्मान पर आधारित समाज के निर्माण के सपने को पूरा करने का विधान है। यह कहना भी गलत है कि इसे अचानक लाया गया है। धामी सरकार द्वारा गठित न्यायमूर्ति रंजना देसाई समिति ने इस पर विस्तार से कार्य किया है। अन्य देशों की संहिताओं, संविधान सभा में हुई बहस आदि का अध्ययन किया गया, लोगों से सुझाव मांगे और जगह-जगह बैठकें की। राज्य स्तर पर लोगों से मिलने के बाद जिला स्तर तक गए और करीब 75 सभायें की। समिति को ढाई लाख से अधिक सुझाव? प्राप्त हुए। किसी भी व्यक्ति, समूह, संगठन या संस्था को समिति से मिलकर राय देने का निषेध नहीं था। इनमें राजनीतिक दल और नेता भी शामिल हैं।

संविधान निर्माण के समय से ही समान नागरिक संहिता पर बहस चलती रही है। इसके विरोध का कारण झूठ और दुष्प्रचार तथा मजहब के नाम पर गैर मजहबी पुरुष मनमानी व्यवस्था को बचाए रखने की मानसिकता रही है जिसका कोई उपचार नहीं। इसे संघ और भाजपा का एजेंडा बताने वाले भूल रहे हैं कि कम्युनिस्ट पार्टियों तथा समाजवादियों के घोषित एजेंडा में समान नागरिक संहिता लागू करना शामिल रहा है। डॉ राम मनोहर लोहिया इसके प्रबल पैरोकार थे। विडंबना देखिए कि आज कम्युनिस्टों और समाजवादियों की मुखर आवाज भी इसके विरुद्ध है।

इससे साबित होता है कि विरोध के पीछे ईमानदारी और नैतिकता नहीं है। संविधान के भाग 4 के अनुच्छेद 44 में संपूर्ण भारत के नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता देने की क्या कदम बढ़ाने की अपेक्षा की गई है। तो उसे अपेक्षा को पूरा करने की शुरुआत हो गई है।

टाईम पास

देश में ऊर्जा व संसाधनों का अपव्यय रुकेगा

हिन्दुस्तान एक ऐसा देश है जहां हर वर्ष कहीं न कहीं चुनाव होते ही रहते हैं। यदि कहा जाये कि त्योहारों के साथ-साथ यह चुनावी उत्सवों का भी देश है तो गलत नहीं होगा। जनसंख्या के आधार पर विश्व का सबसे बड़ा देश हर वर्ष किसी न किसी राज्य में चुनावों की तैयारी में व्यस्त रहता है। जिस कारण देश का बहुत-सा धन, समय, ऊर्जा चुनाव संपन्न कराने में व्यतीत हो जाता है। प्रतिवर्ष जो कर्मचारी चुनाव संपन्न कराने की व्यवस्था में ड्यूटी करते हैं उनके मूल विभाग के कार्य पर भी नकारात्मक असर पड़ता है। प्रतिवर्ष चुनाव होने के कारण भ्रष्टाचार भी चरम सीमा पर पहुंच जाता है। हाल ही में उत्तर प्रदेश में कहीं दीवारों के अंदर से अरबों रुपयों की बरसात हो रही है और कहीं फर्श तोड़कर तहखानों से करोड़ों रुपये निकाले जा रहे हैं। चुनावों में धनबल प्रयोग होने के कारण भ्रष्टाचार का यह सारा धन अलग-अलग हथकंडों से एकत्र किया जाता है। गुंडातत्व का महत्व बढ़ जाता है।

इस तरह नेताओं की भी जो ताकत जनहित के लिए योजनाओं के क्रियान्वयन में लगनी चाहिए वह भी चुनावों की तैयारी में तथा चुनाव जीतने की कोशिश में लग जाती है। नेता लोग स्वयं को नये रूप में तराशने लगते हैं। वे मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए जबरदस्त होमवर्क करते हैं, इसके लिए जाति-धर्म के नाम पर वैमनस्य फैलाने की तथा भय का वातावरण तैयार करने की योजनाएं बनाई जाती हैं।

इन सभी समस्याओं का एक ही समाधान है कि देश की संसद का तथा सभी राज्यों में विधानसभा का चुनाव एक साथ कराया जाये। इसके लिए देश में कई बार बहस छिड़ी भी है। सबने अपने-अपने मत प्रकट किये हैं। कभी पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भी एक साथ चुनाव कराने की इच्छा जताई थी। वर्तमान में देश के प्रधानमंत्री ने भी अलग-अलग मंचों से एक साथ चुनाव कराने की पैरवी की है किंतु एक व्यापक स्तर पर प्रयास नहीं हो पा रहा है। दरअसल, देश की अधिकतर राजनीतिक पार्टियां इस मामले पर उदासीन हैं। कहीं न कहीं एक साथ चुनाव कराने में यह समस्या भी है कि किसी राज्य में सरकार को एक वर्ष हुआ है तो किसी में ढाई या चार वर्ष हुए हैं। तो पांच वर्ष के लिए चुनी हुई सरकार को समय से पहले भंग कैसे करें अथवा जब तक सभी सरकारों के पांच वर्ष पूरे हों तब तक बाकी राज्यों में जहां सरकार का कार्यकाल पूरा हो चुका है वहां कैसे सरकार चलाएं।

फिर जैसे-कैसे एक साथ चुनाव करवा भी दिये जायें तो किसी भी सरकार के गठबंधन के कारण या फिर सांसद, विधायक की मृत्यु के कारण सत्ताधारी पार्टी अल्पमत में आ जाये तो क्या करे। यदि रिक्त सीट पर पुनः चुनाव करवाये जायें तो फिर एक साथ चुनाव कराने के प्रयासों को झटका लग सकता है। अतः इन सभी जटिल स्थितियों के कारण कोई भी राजनीतिक दल देशभर में एक साथ चुनाव कराने को लेकर एकमत नहीं है।

इसका एकमात्र समाधान यही है कि देश का सर्वोच्च न्यायालय स्वयं संज्ञान लेकर इस मामले में हस्तक्षेप करे और राजनीतिक दलों को एक राय बनाने को प्रेरित करे। जब 2024 में देशभर में संसदीय चुनाव की प्रक्रिया प्रारंभ हो तब सभी राज्यों में एक साथ चुनाव कराये जायें बल्कि पंच, पार्षद से लेकर संसद तक सभी चुनाव एक साथ हों। दरअसल, राष्ट्रीय ऊर्जा और धन का अपव्यय रोकने और सामाजिक समरसता बनाये रखने के लिये तमाम उपायों पर विचार किया जाना चाहिए। उसमें उन विकल्पों पर भी गंभीरता से विचार करने की जरूरत है जो एक साथ चुनाव संपन्न होने के बाद यदि किसी सांसद या विधायक की मृत्यु से या फिर किसी गठबंधन के टूटने से सरकार अल्पमत में आ जाये तो आगामी पांच वर्ष पूरे करने तक सरकार कैसे चलायी जा सकती है। इस पर भी विचार होना चाहिए कि बहुमत प्राप्त पार्टी शेष काल पूरा करे अन्यथा बचा हुआ समय पूरा करने के लिए राष्ट्रपति शासन लगाया जाये।

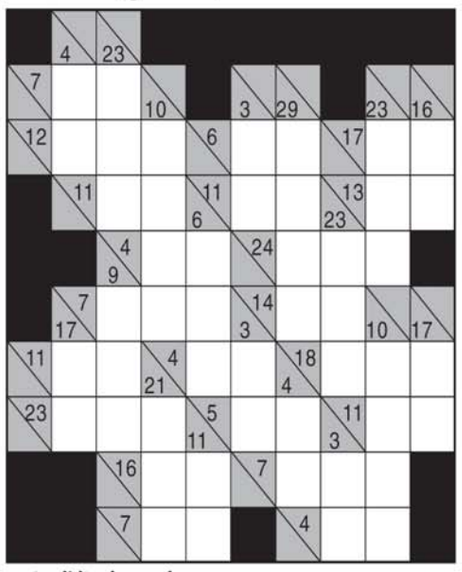

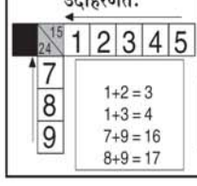

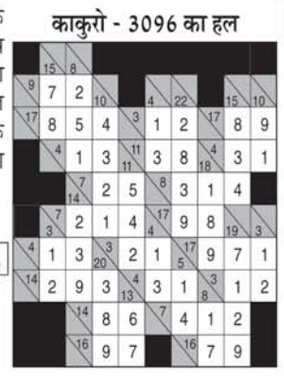

काकुरो पहेली - 3097

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः:

काकुरो - 3096 का हल

हंसी के फूव्वारें

जज (चोर से) - तुम्हारी जेब में जो कुछ है, उसे निकालकर मेज पर रख दो.

चोर (जज से)- यह तो सरासर नाइंसाफी है हुजूर. माल का आधा-आधा होना चाहिए.

□ □ □

बबलू (मम्मी से) - मम्मी प्लीज ये रस्सी अपनी जीभ से काट दो.

मम्मी (बबलू से) - बेवकूफ रस्सी जीभ से कैसे कट सकती है?

बबलू (मम्मी से) - क्यों? कल ही तो पापा कह रहे थे कि आपकी जुबान कैंची की तरह चलती है.

□ □ □

युवा फिल्म अभिनेता (प्रेमिका से)- आज तक मुझसे शादी के सैकड़ों निवेदन किए जा चुके हैं.

प्रेमिका (अभिनेता से)- अच्छा, किस-किस ने निवेदन किया?

अभिनेता (प्रेमिका से) - 'मेरे मम्मी और डैडी ने.' अभिनेता मुस्कराते हुए बोला.

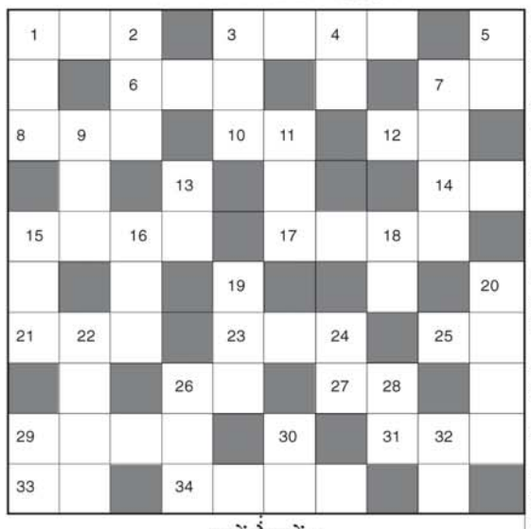

□ □ □

एक छाताधारी सैनिक से उनके अफसर ने पूछा, 'तुमने कितनी बार हवाई जहाज से छलांग लगाई है.'

'केवल एक बार.' सैनिक ने कहा.

'लेकिन तुम्हारे सर्विस रिकार्ड मे तो पन्द्रह बार लिखा हुआ है.'

'शेष चौदह बार तो मुझे धकेला गया था.' सैनिक ने कहा.

फिल्म वर्ग पहेली - 3097

बायें से दायें:-

१. अभिषेक, करीना की 'जिसे तू ना मिला उसे कुछ' गीत वाली फिल्म-३
३. 'कितनी खूबसूरत ये' गीत वाली अमिताभ, विनोद, राखी की फिल्म-४
६. 'दिल विल प्यार व्यार' में आर. माधवन के साथ नायिका-३
७. सनी, प्रीति जिंटा की 'देखें भी तो क्या देखें' गीत वाली फिल्म-२
८. 'कैसी है दिल की लगी' गीत वाली विकास भल्ला, काजोल की फिल्म-३
१०. फिल्म 'ताजमहल' में प्रदीपकुमार की नायिका कौन थी?-२
१२. 'दिल में जागी धड़कन' गीतवाली लक्कीअली, गौरी की फिल्म-२
१४. 'माया मेमसाब' में शाहरूख के साथ नायिका कौन थी-२
१५. अजय देवगन, रवीना की 'एक से लेकर दस तक' गीत वाली फिल्म-४
१७. 'लिखे जो खत तुझे' गीत वाली शशिकपूर, आशापारेख की फिल्म-४
२१. प्रशांत, संध्या की 'पंख होते तो उड़ आती रे' गीत वाली फिल्म-३
२३. 'आज मदहोश हुआ जाए रे' गीत वाली शशिकपूर, राखी की फिल्म-३
२५. मनोज वाजपेयी, तब्बू की 'बाबा मेरी ये जवानी' गीत वाली फिल्म-२
२६. फिल्म 'इंडियन' में शिल्पा शेट्टी के साथ नायक कौन था?-२
२७. फिल्म 'बँबई से आया मेरा दोस्त' की नायिका कौन थी?-२
२९. 'आज फिर तुम पे प्यार आया है' गीत वाली फिल्म-४
३१. 'बंबई से रेल चली' गीत वाली फिल्म-३
३३. नसीर, अतुल, पूजाभट्ट की 'आज हमने दिल का' गीत वाली फिल्म-२
३४. 'गम का फसाना बन' गीत वाली फिल्म-४

ऊपर से नीचे:-

१. 'शरारत' में अभिषेक की नायिका?-३
२. 'अजनबी' में राजेश की नायिका?-३
३. अरशद, मयूरी कांगो की 'गुनगुनाती हुई इक नदी' गीत वाली फिल्म-३
४. जॉन अब्राहम, तारा शर्मा की फिल्म-२
५. सनी, सुनील, शिल्पा की 'शाम भी खूब है' गीत वाली फिल्म-२
७. 'जंगल' में उर्मिला का नायक?-४
९. संजय कपूर, जूही चावला की 'प्यार में दिल का' गीत वाली फिल्म-३
११. 'दूल्हा-दुल्हन की जोड़ी' गीत वाली अमिताभ, हेमा की फिल्म-३
१३. 'इश्क कमीना' गीतवाली फिल्म-२
१५. 'तू ही तू सतरंगी' गीतवाली फिल्म-२,१
१६. राज कुमार, हेमा, शत्रुघ्न, विजयेंद्र, मिथुन की १९८४ की एक फिल्म-३
१८. चंद्रचूड़सिंह, महिमा की फिल्म-२
१९. मिलिंद, विक्रम सलूजा, किरण की 'चंदा की चांदनी' गीत वाली फिल्म-३
२०. 'जैसे इक चाँद का टुकड़ा' गीत वाली सनी, अनिल, किमी की फिल्म-४
२२. 'बॉक्सर भाई' गीत वाली फिल्म-४
२४. 'चंपई धूप के साये' गीतवाली फिल्म-२
२६. 'आँखों में नींदें ना दिल में करार' गीत वाली फिल्म-३
२८. संजय कपूर, माधुरी की 'तूने अगर प्यार से' गीत वाली फिल्म-२
२९. 'चाँदनी रूप की' गीत वाली फिल्म-२
३०. 'ये कैसा है शहर' गीत वाली फिल्म-२
३२. 'कसूर' में आफताब शिवदासानी के साथ नायिका कौन थी-२

फिल्म वर्ग पहेली - 3096

सूडोकु -3097

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
■ पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -3096 का हल

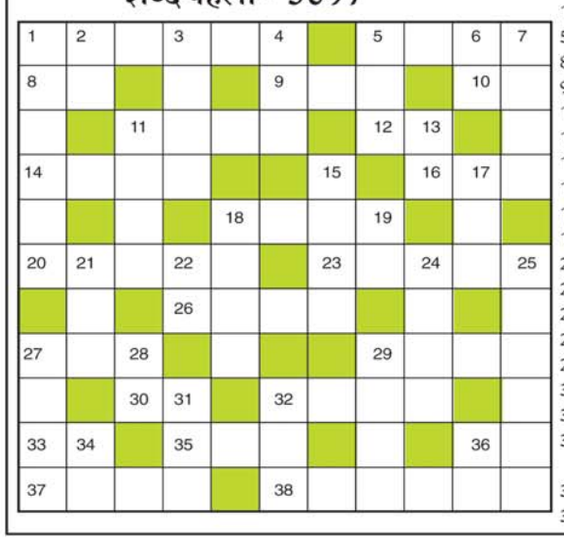

2	3	8	5	1	9	6	4	7
9	6	4	7	3	8	2	5	1
5	1	7	4	6	2	8	3	9
3	2	5	1	9	7	4	6	8
1	8	9	6	4	3	7	2	5
4	7	6	2	8	5	1	9	3
6	4	3	8	5	1	9	7	2
8	9	2	3	7	4	5	1	6
7	5	1	9	2	6	3	8	4

शब्द पहेली - 3097

बाएँ से दाएँ

1.हलचल,कोलाहल-3,3
5.मानवीयता-4
8.शरीर, बदन-2
9.ऊंचाई-3
10.तीर, बाण-2
11.मनमोहक-4
12.रग, नाड़ी-2
14.दुत्कारना-4
16.चतुर, फुर्तीला-3
18.साझेदार-4
20.रमण लायक-3,2
23.भारी, वजन वाला-5
26.असावधानी-4
27.दाल पीसना-3
29.निश्चित-4
30.कविता-2
32.शरीर व इच्छा-2,2
33.भारत के झंडे का एक एक रंग-2
35.सलाम करना-3
36.रास्ता-2
37.राह पर चलनेवाले-4
38.जहाज चलाने की प्रक्रिया-3,3

ऊपर से नीचे

1.पैतृक संपत्ति का वारिस-6
2.गाय के स्तन-2
3.प्रसन्न होने का भाव-4
4.लगन, जिज्ञासा-3
5.खदान,खान (अंग्रेजी में-3)
6.अधीन, काबू-2
7.डामर, टार-4
11.पूर्वरक्षण, रिजर्वेशन-4
13.सच्चाई-2
15.दुश्मनी,शत्रुता-4
17.घूंघट, बुरखा-3
18.भाग्य का लेखा-जोखा-4
19.धूल, रेत-2
21.भवन, प्रसाद-3
22.जोड़, कुल-2
24.लावण्ययुक्त-4
25.जीवन निर्वाह का ढंग,-3,3
27.विजयादशमी-4
28.मोड़, छोर-2
29.मृत्यु का देवता, यम-4
31.बुरी आदत-3
32.सभ्य व्यवहार-3
34.मार्ग-2
36.गोंद, वार्निश-2

शब्द पहेली -3096 का हल

ग्रेटर नोएडा में बिल्डर प्लॉट्स की होगी बड़े स्तर पर नीलामी

▶ ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण जिन 8 चिह्नित बिल्डर प्लॉट्स के ई-ऑक्शन की प्रक्रिया जीबीसी-4.0 के बाद पूरी की जाएगी उनमें ग्रेटर नोएडा के सेक्टर 12 के दो केटेगरी के प्लॉट्स भी शामिल हैं

ग्रेटर नोएडा। उत्तर प्रदेश सरकार ने ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी (जीबीसी-4.0) के आयोजन के साथ ही ग्रेटर नोएडा क्षेत्र में हाउसिंग व व्यवसायी गतिविधियों को बढ़ावा देने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

इस क्रम में ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण ने आठ प्रकार के बिल्डर प्लॉट्स के आवंटन की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

अधिकृत सूत्रों के अनुसार 18215 से लेकर 38711 स्क्वेयर मीटर प्रसार क्षेत्र वाले इन प्लॉट्स का रिजर्व प्राइस 83.78 करोड़ रुपए से लेकर 178.34 करोड़ रुपए के बीच निर्धारित किया गया है। खास बात यह भी है कि बिल्डर प्लॉट आवंटन स्कीम के जरिए जिन प्लॉट्स का ऑक्शन किया जाएगा वह ग्रेटर नोएडा में बन रहे जेवर एयरपोर्ट के पास ही स्थित हैं। साथ ही, जिन सेक्टर्स में इस स्कीम के जरिए बिल्डर प्लॉट्स की नीलामी का मार्ग प्रशस्त होगा वह कनेक्टिविटी के लिहाज से भी बेहद अहम होगी। फिलहाल, इस स्कीम के तहत ई-ऑक्शन प्रक्रिया के जरिए जिन प्लॉट्स की नीलामी होनी है उनकी ब्रोशर डाउनलोडिंग व रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया शुरू हो गई है तथा एक अप्रैल अंतिम तिथि निर्धारित की गई है।

उन्होने बताया कि ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण ने आठ प्रकार के बिल्डर प्लॉट्स के आवंटन की प्रक्रिया शुरू की है उनमें म्यू (एमयू), ओमीक्रॉन-1ए, इटा-02, सिग्मा-3 सेक्टर 36 व सेक्टर 12 प्रमुख हैं। प्रक्रिया के अंतर्गत म्यू सेक्टर के प्लॉट नंबर जीएच-02ई (जिसका वर्ग क्षेत्र 18215 स्क्वेयर मीटर निर्धारित है) का रिजर्व्ड प्राइस 87.78 करोड़ रुपए रखा गया है। इसी प्रकार ओमीक्रॉन-1ए सेक्टर में प्लॉट जीएच-01/जीएच01ए (जो कि 30470.52 स्क्वेयर मीटर में फैला है) का रिजर्व्ड प्राइस 140.16 करोड़ रुपए निर्धारित की गई है। वहीं, इटा-02 सेक्टर के प्लॉट नंबर जीएच01ए (जोकि 28265 वर्ग मीटर में फैला है) का रिजर्व्ड प्राइस 143.02 करोड़ रुपए निर्धारित की गई है। वहीं, सिग्मा-3 सेक्टर के प्लॉट नंबर 151 (जो कि 30000 वर्ग क्षेत्र में फैला हुआ है) का रिजर्व प्राइस 138 करोड़ तथा प्लॉट नंबर 207 (जो कि 38771 मीटर वर्ग क्षेत्र में फैला हुआ है और स्कीम के तहत आवंटित होने वाला सबसे बड़े प्रसार क्षेत्र वाला प्लॉट है) का रिजर्व प्राइस 178.34 करोड़ रुपए रखा गई है जो कि सर्वाधिक है।

ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण जिन 8 चिह्नित बिल्डर प्लॉट्स के ई-ऑक्शन की प्रक्रिया जीबीसी-4.0 के बाद पूरी की जाएगी उनमें ग्रेटर नोएडा के सेक्टर 12 के दो केटेगरी के प्लॉट्स भी शामिल हैं। इनमें से सेक्टर 12 के जीएच-01/बी, सी, डी, ई, जे व के में 32350 वर्ग मीटर के प्लॉट भी शामिल हैं जिनका रिजर्व्ड प्राइस 130.05 करोड़ रुपए निर्धारित की गई है। वहीं, सेक्टर 12 के ही जीएच-01/एफ, जी, एच व आई में 22558 वर्ग मीटर क्षेत्र वाले प्लॉट का रिजर्व प्राइस 90.68 करोड़ रुपए निर्धारित की गई है। इसी प्रकार सेक्टर 36 के प्लॉट बी-255 (जिसका 13938.50 वर्ग मीटर क्षेत्र में प्रसार है) का रिजर्व प्राइस 67.32 करोड़ रुपए निर्धारित किया गया है जो कि स्कीम के तहत सबसे कम क्षेत्रफल और सबसे कम रिजर्व प्राइस वाला प्लॉट है। उल्लेखनीय है कि यह सभी प्लॉट्स जेवर एयरपोर्ट के पास स्थित होने के कारण बेहतर कनेक्टिविटी युक्त हैं और यही कारण है कि भविष्य में इन क्षेत्रों का पौश रेजिडेंशियल व कमर्शियल एरिया के रूप में विकास सुनिश्चित हो सकेगा। ऐसे में, योगी सरकार ने इन प्लॉट्स की क्षमता को पहचानते हुए अभी से इस क्षेत्र का विकास शुरू कर दिया है।

स्क्रैप माफिया रवि काना की पत्नी गिरफ्तार

रवि काना की पत्नी को दिल्ली एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया गया

ग्रेटर नोएडा। (पी एम ए) जिले के सबसे बड़े स्क्रैप माफिया और सरिया तस्कर की बीवी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। यह कामयाबी नोएडा पुलिस कमिश्नरेट ने हासिल की है। नोएडा पुलिस के द्वारा स्क्रैप माफिया रवि काना की बीवी को दिल्ली एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया गया है। बताया जा रहा है कि वह देश छोड़ने की फिराक में थी, लेकिन उससे पहले ही यह कामयाबी हासिल कर ली।

रवि की पत्नी मधु नागर को गिरफ्तार क्यों किया?

दरअसल, रवि काना ने नोएडा में एक लड़की के साथ गैंगरेप किया था। उस मामले में रवि काना के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया। गैंगरेप के बाद रवि काना के ऊपर पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह ने सबसे बड़ा एक्शन लिया। लक्ष्मी सिंह के आदेश पर रवि और उसके गैंग के सभी साथियों के खिलाफ मुकदमे दर्ज किए गए, जिसमें रवि की बीवी मधु नागर और गर्लफ्रेंड काजल झा भी शामिल थी।

सभी की गिरफ्तारी के लिए लगातार तदबिश दी जा रही थी। इसी बीच पुलिस ने रवि काना की पत्नी मधु नागर को गिरफ्तार किया।

स्क्रैप की दुनिया में रवि काना कैसे बना बादशाह?

स्क्रैप माफिया रवि काना ने पुलिस सुरक्षा में रहते हुए काफी बड़े अपराध किया। इस समय रवि के खिलाफ 11 मुकदमे दर्ज हैं। 10 मुकदमे दर्ज होने तक तो रवि काना बाहुबली बनाकर घूमता रहा, लेकिन 11वां मुकदमा दर्ज होने के बाद रवि काना के उल्टे दिन शुरू हो गए रवि काना को गौतमबुद्ध नगर में स्क्रैप की दुनिया का बादशाह भी कहा जाता है।

कौन है रवि काना

रवि काना हरेंद्र प्रधान दादुपुर का छोटा भाई है। हरेंद्र प्रधान की हत्या वर्ष 2015 में सुंदर भाटी ने करवाई थी। हरेंद्र नागर हत्याकांड गौतमबुद्ध नगर के चर्चित हत्याकांड में शामिल है। हरेंद्र नागर की हत्या होने के बाद स्क्रैप और सरिया तस्करी का सारा काम रवि काना ने संभाल लिया। हरेंद्र प्रधान हत्याकांड के बाद रवि काना ने अपनी जान का खतरा बताते हुए सुरक्षा मांगी और सरकार ने रवि काना को पुलिस सुरक्षा दी। सुरक्षा मिलने के बाद रवि ने इसका दुरुपयोग किया। रवि काना ने स्क्रैप माफिया और तस्करी के लिए पुलिस सुरक्षा का इस्तेमाल किया था। रवि के अलावा उसकी भाभी यानी कि हरेंद्र नागर की बीवी बेवन नागर और भाई राजकुमार नागर को भी पुलिस सुरक्षा मिली। हालांकि, करीब 6 महीने पहले रवि काना की पुलिस सुरक्षा हटा ली गई।

ऐप इंस्टॉल कराकर खाते से उड़ाए 1 लाख रुपये

जेवर। दनकौर कोतवाली क्षेत्र की चीती गांव निवासी एक युवक को व्हाट्सएप पर ऐप भेजकर एक अज्ञात आरोपी ने उसके खाते से करीब 1 लाख रुपये रकम उड़ा दी। पीड़ित का कहना है कि भेजने के बाद आरोपी ने उसको इंस्टॉल करने को कहा। जैसे ही पीड़ित ने ऐप को इंस्टॉल किया। उसके कुछ देर बाद ही उसके खाते से यह रकम उड़ गई। अपने साथ हुई ठगी की जानकारी होने पर पीड़ित ने इस संबंध में कोतवाली दनकौर की साइबर सेल में पहुंचकर शुक्रवार को आरोपी के खिलाफ शिकायत की है। पीड़ित मनोज भाटी ने पुलिस को दी शिकायत में कहा है कि शुक्रवार को एक अज्ञात आरोपी ने उसको फोन किया और एक काम से संबंधित एक ऐप को फोन में

डाउनलोड करने को कहा। पीड़ित आरोपी के झांसे में आ गया। जैसे ही आरोपी ने व्हाट्सएप के माध्यम से पीड़ित को ऐप भेजी, तो उसने आरोप के बताए हुए तरीके के अनुसार ऐप को इंस्टॉल किया। जिसमें बैंक से संबंधित जानकारी भी पीड़ित ने उसमें भर दी। पीड़ित का कहना है कि करीब चार बार में उसके खाते से 1 लाख रुपये की रकम कटने का मैसेज आया। जैसे ही पीड़ित आरोपी से संपर्क किया तो उसने फोन ऑफ कर लिया।

पुलिस कॉन्स्टेबल भर्ती परीक्षा के नोएडा में बने 32 सेंटर

एजेंसी

नोएडा। उत्तर प्रदेश पुलिस कॉन्स्टेबल भर्ती परीक्षा शनिवार और रविवार को जनपद के 32 सेंटर पर आयोजित की जाएगी।

इसमें 12 सेंटर नोएडा में हैं। यूपी पुलिस कॉन्स्टेबल भर्ती परीक्षा में कुल 60 हजार परीक्षार्थी बैठेंगे। परीक्षा को लेकर कमिश्नरेट पुलिस अलर्ट मोड पर है। इसके लिए कुल 800 पुलिसकर्मियों की तैनाती सेंटर के आसपास रहेगी। सेंटर के बाहर सादे कपड़ों में भी पुलिसकर्मियों की तैनाती रहेगी। सीसीटीवी कैमरे के जरिए सभी परीक्षार्थियों पर नजर रखी जाएगी। पेपर लीक और सॉल्वर गैंग पर नजर रखने के लिए जिला पुलिस के साथ-साथ एसटीएफ भी सक्रिय है। पुराने सभी सॉल्वर गिरोह का डाटा पुलिस ने पहले ही एकत्र कर लिया है। परीक्षा में किसी प्रकार की बाधा न आए इसके लिए पुलिस ने शुक्रवार को सभी सेंटरों का निरीक्षण किया।

नोएडा में सुपरटेक के निदेशक समेत 14 पर केस

12 लाख रुपए जमा करने के बाद भी नहीं मिला फ्लैट, अब दूसरे के नाम किया अलॉट

नोएडा। पैसे लेकर फ्लैट न देने के मामले में सुपरटेक बिल्डर लिमिटेड के निदेशक आरके अरोड़ा और उनके पुत्र समेत 14 लोगों के खिलाफ ग्रेटर नोएडा निवासी एक व्यक्ति ने सेक्टर-58 थाने में केस दर्ज कराया है।

न्यायालय के आदेश पर पुलिस ने केस दर्ज कर मामले की जांच भी शुरू कर दी है। शिकायत में ग्रेटर नोएडा के बीटा टू स्थित गोल्फ विस्टा अपार्टमेंट निवासी संजीव कुमार ने बताया कि

बिल्डर द्वारा उन्हें वर्ष 2010 में दो बैडरुम का फ्लैट 16 लाख रुपए में देने का आश्वासन दिया गया। 12 लाख रुपए जमा भी करा दिए। बावजूद इसके 14 वर्ष बाद फ्लैट नहीं दिया।

अब आरोपी पक्ष की ओर से निर्धारित धनराशि से 12 लाख रुपए अधिक मांग रहे हैं। इसका जब शिकायतकर्ता ने विरोध किया तो आरोप है कि आरोपियों ने उसके साथ मारपीट करते हुए जान से मारने की धमकी दी और भगा दिया। आरोपी कभी कोरोना तो कभी अन्य बहानों से शिकायतकर्ता को गुमराह करते रहे।

अंत में संबंधित फ्लैट को आरोपियों ने किसी दूसरे को अलॉट कर दिया। इस मामले में सुपरटेक बिल्डर लिमिटेड के निदेशक आरके अरोड़ा, मोहित अरोड़ा, जीएल खेड़ा, राज मंगल, रामानुज शर्मा और अनुज कुमार शर्मा समेत छह अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज हुआ है। थाना प्रभारी ने बताया कि जल्द ही मामले में नामजद आरोपियों से पूछताछ कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

23 कार्यों के लिए 85 करोड़ रुपये के टेंडर जारी

गौतम बुद्ध नगर। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने सेक्टरों व गांवों में मरम्मत व रखरखाव के कार्यों को और तेज कर दिया है। प्राधिकरण ने 23 कार्यों के लिए लगभग 85 करोड़ रुपये के टेंडर निकाले हैं। इसी माह टेंडर प्रक्रिया को पूरा काम शुरू कराने की तैयारी है।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार ने ग्रेटर नोएडा के सेक्टरों व गांवों में विकास व रखरखाव के कार्यों को तेज करने के निर्देश दिए हैं। सीईओ के निर्देशों पर अमल करते हुए परियोजना, जल-सीवर और

उद्यान विभाग ने 23 कार्यों के लिए करीब 85 करोड़ रुपये के टेंडर निकाल दिए हैं।

प्राधिकरण के जल-सीवर विभाग के महाप्रबंधक जितेंद्र गौतम ने बताया कि सेक्टर ईकोटेक दो व तीन के एसटीपी का 5 वर्ष तक रखरखाव व संचालन के लिए टेंडर जारी किए गए हैं। इस कार्य पर लगभग 11 करोड़ रुपये खर्च होंगे। इसके साथ ही जोन 1, 2, 3, 4 व 5 के गांवों व सेक्टरों में सीवर सिस्टम को दुरुस्त करने के लिए लगभग 70 करोड़ रुपये के टेंडर जारी कर दिए गए हैं।

पौव्वारी स्थित गौशाला में बिजली कार्य और सिरसा, कासना व अन्य गांवों में 6 प्रतिशत आबादी भूखंडों के विद्युतीकरण के लिए भी टेंडर जारी हुए हैं। ईकोटेक 6, 7 व 8 में पार्कों व ग्रीन बेल्ट के विकास और अनुरक्षण के कार्यों के लिए भी टेंडर जारी हुए हैं। सेक्टर टेकजोन टू में 60 व 45 मीटर चैड़ी सड़क की ब्रिक ड्रेन की रिपेयरिंग, बीटा वन व स्वर्णनगरी में शापिंग सेंटर की मरम्मत, म्यू टू में 29.76 वर्ग मीटर क्षेत्रफल के चार मंजिला फ्लैटों की मरम्मत, अच्छेजा व डाबरा के श्मशान घाट के मरम्मत का कार्य आदि के लिए भी टेंडर जारी हो गए हैं।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार ने निर्धारित अवधि में टेंडर प्रक्रिया को पूरा कर इन कार्यों को प्राथमिकता पर कराने के निर्देश दिए हैं।

रिटायर्ड विंग कमांडर से 86 हजार ठगे

नोएडा। साइबर अपराधी ने लिंक पर क्लिक करवाकर रिटायर्ड विंग कमांडर के खाते से 86 हजार रुपये निकाल लिए। पीड़ित की शिकायत पर सेक्टर-39 पुलिस ने केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।सेक्टर-107 निवासी रिटायर्ड विंग कमांडर देवेंद्र ने शिकायत में बताया कि उनका स्पीड पोस्ट के माध्यम से एक पार्सल आना था। वह 12 फरवरी को अपने पार्सल को ट्रैक कर रहे थे। उन्होंने स्पीड पोस्ट ट्रैकिंग साइट पर दिए गए कस्टमर केयर के फोन नंबर पर कॉल की। कस्टमर केयर से बताया गया कि उनका पता गलत होने के कारण पार्सल नहीं पहुंच पा रहा है। उन्हें अपना पता ठीक करना होगा और पांच रुपये का भुगतान करना होगा। उन्होंने डिलीवरी के समय पोस्टमैन को पांच रुपये का भुगतान करने की बात कही, लेकिन कस्टमर केयर के प्रतिनिधि ने बताया कि उन्हें पेमेंट ऑनलाइन ही करना पड़ेगा। भुगतान करने के लिए उनके मोबाइल फोन पर एक लिंक भेजा गया। जैसे ही देवेंद्र ने लिंक पर क्लिक किया तो उनके खाते से कई बार में 86 हजार रुपये निकल गए। मोबाइल पर पैसे कटने का मैसेज आने के बाद उनको ठगी की जानकारी हुई। इसके बाद उन्होंने संबंधित बैंक के कर्मचारियों से संपर्क कर खाता बंद कराया और पुलिस से मामले की शिकायत की।

एनटीपीसी की परीक्रमा करके किसानों ने किया समर्थन

एजेंसी

नोएडा। किसान आंदोलन के चलते शुक्रवार को देशभर में ग्रामीण भारत बंद का आह्वान किया गया है। नोएडा का सबसे बड़ा मार्केट अट्टा बंद करवा दिया गया। यहां 250 से 300 दुकानें हैं। किसान यहां धरने पर बैठे।

किसानों ने एनटीपीसी की परिक्रमा करके गांव की दुकानें भी बंद करवाने के आगे बढ़े लेकिन वहां बैरिकेड होने के चलते वापस धरना स्थल पर आ गए। हालांकि 1 घंटे बाद ही अट्टा मार्केट की दुकानें खोल दी गईं।

बता दें कि संयुक्त किसान मोर्चा ने केंद्रीय ट्रेड यूनियन के साथ मिलकर भारत बंद बुलाने की घोषणा की। केंद्र सरकार से अपनी मांगे मनवाने के लिए किसान कई दिनों से दिल्ली पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन उन्हें हरियाणा बॉर्डर के पास रोका गया है।

भारत बंद के तहत सुबह 6 बजे से शाम 4 बजे तक विरोध प्रदर्शन चलने वाला है। नोएडा के कई किसान संगठनों ने इसका समर्थन किया है वो भारत बंद में संयुक्त किसान मोर्चा के साथ है।

एनटीपीसी पर होंगे एकत्रित यहां से आगे की तय होगी रणनीति

भारत बंद का समर्थन नोएडा में पिछले दो महीने से धरना दे रहे किसान संगठन भारतीय किसान परिषद ने किया है। परिषद के अध्यक्ष ने कहा कि हम सभी किसान एक है। भले ही हमारी मांग और मुद्दे अलग है। लेकिन हम सभी किसान है और भारत बंद का पूरा समर्थन करते है।

रणनीति के तहत दोपहर 1 बजे किसान सेक्टर-24 एनटीपीसी पर एकत्रित होंगे। यहां पंचायत करने के बाद आगे का फैसला लिया जाएगा। इस दौरान कोई काम नहीं किया जाएगा।

भारत बंद को लेकर किसानों ने निकाला पैदल मार्च

कई किसान संगठनों ने लिया हिस्सा, महिलाओं ने भी की भागीदारी

गौतम बुद्ध नगर। भारत बंद को लेकर ग्रेटर नोएडा में किसानों ने पैदल मार्च निकाल कर प्रदर्शन किया। भारी संख्या में किसान इकट्ठे हुए किसानों में ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के खिलाफ काफी आक्रोश दिखाई दिया। वहीं भारत बंद का समर्थन करते हुए प्रदर्शन में महिलाएं और किसान भारी संख्या में शामिल रहे।

किसानों ने अल्फा वन गोल चक्कर से परी चौक तक पैदल मार्च निकाला। इस दौरान सुरक्षा व्यवस्था को देखते हुए बाहरी पुलिस बल मौके पर तैनात रही। किसानों के भारत बंद के आह्वान के बाद ग्रेटर नोएडा में भी ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण पर प्रदर्शन कर रहे किसानों ने देशव्यापी बंद को समर्थन दिया। इस दौरान किसानों ने ग्रेटर नोएडा में भारी संख्या में इकट्ठे होकर एक जुलूस निकाल कर पैदल मार्च कर भारत बंद आंदोलन को समर्थन दिया।

ग्रेटर नोएडा में भारी संख्या में

किसान और महिलाओं ने पैदल मार्च जुलूस में हिस्सा लिया। इस दौरान परी चौक पर भारी जाम लग गया। जहां एक तरफ देश में किसान अपनी मांगों को लेकर आंदोलन कर रहे हैं और शुक्रवार को देशव्यापी बंद का किसानों ने ऐलान किया था। किसानों के देशव्यापी बंद को समर्थन देते हुए ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण पर धरना दे रहे किसानों ने भी जुलूस पैदल मार्च निकाला।

किसान सभा के जिला अध्यक्ष डॉ. रुपेश वर्मा ने कहा कि पूरे देश में किसानों के मुद्दे पर चर्चा हो रही है इसीलिए किसान सभा के द्वारा बीते 8 फरवरी को जबरदस्त आंदोलन किया गया था।

जिसके परिणाम में किसानों के मुद्दे पर उच्च स्तरीय शासन की कमेटी बनाने का 18 फरवरी तक आश्वासन दिया गया है।

किसान नेता रोहित बैसोया ने कहा कि किसानों को अधिग्रहण भूमि के एवज में मिलने वाले 10 प्रतिशत आवासीय भूखंड जब बूझकर नहीं दिए जा रहे हैं।

मांगे पूरी होने तक जारी रहेगा धरना

प्राधिकरण के अधिकारी किसानों की समस्याओं को उलझा रखा है इसीलिए किसानों ने अब तय किया है कि अबकी बार आर-पार करके ही छोड़ेंगे।

वहीं किसान नेता कृष्ण ने कहा कि शुक्रवार को भारत बंद के ऐलान के बाद ग्रेटर नोएडा के किसानों ने भी जुलूस पैदल मार्च निकालकर आंदोलन को अपना समर्थन दिया। प्रदर्शन के लिए किसान व महिलाएं भारी संख्या में इकट्ठा हुए और उसके बाद अल्फा वन गोल चक्कर से परी चौक तक पैदल मार्च निकाला। किसानों का कहना है कि जब तक प्राधिकरण किसानों की सभी मांगों को पूरा नहीं करता तब तक उनका यह धारणा लगातार जारी रहेगा।

शार्ट न्यूज

गर्भवती होने पर टीचर पत्नी की जहर देकर हत्या

गाजियाबाद। गाजियाबाद में डीपीएस इंदिरापुरम की टीचर कामना भारद्वाज की मौत में 7 महीने बाद बड़ा खुलासा हुआ है। फोरेंसिक लैब से आई बिसरा रिपोर्ट में पता चला है कि जहर देकर उसकी हत्या की गई थी। पुलिस ने अब इस मामले में मृतका के दूसरे पति और उसके बेटे को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी ने कुबूल किया है कि वो दूसरी पत्नी से कोई संतान नहीं चाहता था। इसके अलावा दूसरी पत्नी ने सारी प्रॉपर्टी अपनी बहनों के नाम की हुई थी। इसलिए तंग आकर उसने पत्नी को मार डाला। एसीपी सलोनी अग्रवाल ने बताया, वेव सिटी थाना क्षेत्र स्थित आदित्य वर्ल्ड सिटी में अर्बन होम सोसाइटी है। यहां पर द्वारका नई दिल्ली की कामना भारद्वाज अपने दूसरे पति थॉमस जूलियस और उसके 18 साल के बेटे एलन जूलियस के साथ रहती थीं। कामना इंदिरापुरम क्षेत्र के दिल्ली पब्लिक स्कूल में पढ़ाती थीं। थॉमस जूलियस दिल्ली के एक बैंक में कैशियर है। 5 जुलाई 2023 को कामना भारद्वाज की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। 6 जुलाई को कामना की बहन सपना भारद्वाज ने उसके पति-बेटे पर हत्या का आरोप लगाते हुए थाने में शिकायत की।

रिहायशी बिल्डिंग की तीसरी मंजिल पर लगी आग

गाजियाबाद। गाजियाबाद के थाना इंदिरापुरम के वसुंधरा इलाके में रेजिडेंशियल बिल्डिंग के तीसरे फ्लोर पर आग लग गई। यहां पर कॉमर्शियल एक्टिविटी हो रही थी। आनन फानन में दमकल विभाग की टीम यहां पहुंची और आग पर काबू पाया। पूरी बिल्डिंग में फायर फाइटिंग का कोई भी साधन उपलब्ध नहीं था। गाजियाबाद में चीफ फायर ऑफिसर राहुल पाल ने बताया थाना इंदिरापुरम के वसुंधरा के 2ष्ट सेक्टर के 250 नम्बर प्लाट की टेरस फ्लोर पर अस्थाई स्ट्रक्चर बना हुआ था। जिस में आग लग गई। आग की सूचना मिलते ही दमकल की दो गाड़ियां मौके पर पहुंची। यह बिल्डिंग रेजिडेंशियल है लेकिन इसमें कॉमर्शियल एक्टिविटी हो रही थी। बिल्डिंग के अंदर ट्रेडिंग का काम होता था। टेरिस पर अस्थायी स्ट्रक्चर पर कबाड़ भरा हुआ था। जिसमें आग लग गई। आग तेजी से फैल रही थी। दमकल कर्मी बिल्डिंग के दोनों तरफ से चढ़े और होज पाइप लगाकर आग पर काबू पाने की कोशिश की। करीब 45 मिनट में कड़ी में मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया है। बिल्डिंग में कोई फायर फाइटिंग के साधन नहीं थे। जो लोग बिल्डिंग में फंसे थे वह सब बाहर आ गए थे।

मोदीनगर में डंपिग ग्राउंड बनाने का विरोध

मोदीनगर। मोदीनगर कस्बा निवाड़ी के लोगों ने नगर पंचायत कार्यालय पर धरना देकर जमकर हंगामा किया। कस्बा के लोगों का कहना है कि किसी भी कीमत पर डंपिग ग्राउंड का निर्माण नहीं होने दिया जाएगा। उपजिलाधिकारी न्यायिक को एक ज्ञापन दिया है। जिलाधिकारी कार्यालय से नगर पंचायत निवाड़ी को पत्र लिखकर गाजियाबाद का कूड़ा डालने के लिए डंपिग ग्राउंड बनाने के लिए तीन सौ बीघा भूमि उपलब्ध कराने को कहा है। इसके बाद से ही कस्बा निवाड़ी के लोग डंपिग ग्राउंड बनाने के विरोध में खुलकर सामने आ गए है। नगर पंचायत निवाड़ी के कार्यालय पर कस्बा के सैकड़ों लोगों ने एक धरना दिया और जमकर हंगामा किया। धरने की अध्यक्षता भाजपा नेता राकेश त्यागी व संचालन सतेन्द्र त्यागी व साधान सहकारी समिति के अध्यक्ष प्रवीण त्यागी ने किया। इस मौके पर लोगों ने कहा कि कस्बा निवाड़ी में 25 हजार बीघा से अधिक आम के बाग है। जिस कारण इस क्षेत्र को हरित पट्टी कहा जाता है। यदि डंपिग ग्राउंड बना तो आम के पेड़ों को काफी नुकसान होगा और क्षेत्र में बीमारियां फैल जाएगी। उनका कहना है कि गाजियाबाद शहर का कूड़ा निवाड़ी में नहीं डालने दिया जाएगा।

करंट लगने पर महिला की मौत

ग्रेटर नोएडा। सूरजपुर कोतवाली क्षेत्र के देवला गांव में किराये पर रहने वाली महिला की करंट लगने से मौत हो गई। पानी गर्म करने के लिए लगाई गई बिजली की रॉड छूने के कारण महिला को करंट लगा था। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।मूलरूप से बिहार निवासी भूदेव दास अपनी पत्नी रूबी देवी और बच्चों के साथ देवला गांव में किराये पर रह रहे हैं। भूदेव ने पुलिस को बताया कि उनकी पत्नी रूबी देवी ने बुधवार को बच्चों को नहलाने के लिए पानी गर्म करने के लिए रॉड लगाई थी। जल्दबाजी में रूबी देवी का हाथ रोड से छू गया और वह करंट की चपेट में आकर बेहोश होकर बाथरूम में गिर गईं। भूदेव दास पड़ोसी की मदद से अपनी पत्नी रूबी देवी को अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। अस्पताल से जानकारी मिलने पर मौके पर पहुंची सूरजपुर कोतवाली पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है।

यूपी बोर्ड परीक्षा में नकल रोकने को कड़े इतजाम

नोएडा। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद (यूपी बोर्ड) की हाईस्कूल और इंटरमीडिएट की परीक्षाएं 22 फरवरी से शुरू होंगी और नौ मार्च तक चलेंगी। इस वर्ष जिले में 42 हजार विद्यार्थी परीक्षा में शामिल होंगे। माध्यमिक शिक्षा परिषद ने नकल रोकने के लिए जिले में कड़े इतजाम कर रहा है। केंद्रों पर 360 डिग्री पर घूमने वाले कैमरे लगाए जा रहे हैं। इससे परीक्षार्थी और शिक्षकों पर नजर रखी जाएगी।जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ. धर्मवीर सिंह ने बताया कि यूपी बोर्ड की परीक्षा के लिए जिले में 59 केंद्र बनाए गए हैं। इस वर्ष परीक्षा में नकल रोकने के लिए बोर्ड की ओर से कड़े प्रावधान किए गए हैं। इस बार कॉपियों में नंबरिंग की गई है। साथ ही उनमें सिक्योरिटी कोड भी मुद्रित होगा। उन्होंने बताया कि अब तक बोर्ड की ओर से केंद्रों की निगरानी के लिए डीआईओएस एवं लखनऊ में कंट्रोल रूम स्थापित किया जाता रहा है। इस बार निगरानी और प्रश्नपत्रों के रखरखाव के लिए क्षेत्रीय कार्यालयों में भी कमांड एवं कंट्रोल सेंटर स्थापित किए जाएंगे।

हिंडन से किशनगढ़ के लिए उड़ान शुरू

ट्रांस हिंडन। हिंडन एयरपोर्ट से किशनगढ़ के लिए उड़ान शुरू हो गई। पहले किशनगढ़ से उड़ा विमान करीब साढ़े तीन बजे यहां पहुंचा और फिर शाम साढ़े पांच बजे गाजियाबाद से किशनगढ़ के लिए विमान रवाना हुआ, जिसे एयरपोर्ट निदेशक सरस्वती वेंकटरमण ने हरी झंडी दिखाई।किशन गढ़ से आई फ्लाईट में चिश्ती फाउंडेशन अजमेर शरीफ के चेयरमैन हाजी सैयद सलमान चिश्ती भी यात्रियों में शामिल रहे।किशनगढ़ से 57 यात्री गाजियाबाद पहुंचे और यहां से 47 यात्री पहली फ्लाईट में सवार हुए थे। बता दें कि स्टार एयरलाइंस ने अधिक से अधिक यात्रियों को सफर कराने के लिए पहले सप्ताह इकॉनोमी क्लास की टिकट सिर्फ 999 रुपये रखी है। किशनगढ़ से परिवार के साथ गाजियाबा पहुंचे महेंद्र ने बताया कि अच्छी शुरुआत है। इससे समय काफी बच गया। ट्रेन से आने जाने में सात-आठ घंटे एक तरफ से लग जाते थे और विमान सेवा शुरू होने पर सिर्फ एक घंटे में यहां पहुंच गए। गाजियाबाद से किशनगढ़ जाने वाले यात्रियों ने लखनऊ और अयोध्या के लिए विमान सेवा जल्द शुरू करने की भी मांग रखी।

दुष्कर्म करने वाले को सात साल कैद की सजा

गाजियाबाद। नाबालिग के साथ दुष्कर्म के मामले में अदालत ने दोषी को सात साल कैद की सजा सुनाई है। कोर्ट ने अभियुक्त पर 27 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया है।विशेष लोक अभियोजक हरीश कुमार ने बताया कि थाना खोड़ा क्षेत्र में रहने वाली नाबालिग दिल्ली स्थित स्कूल में नौवीं कक्षा में पढ़ती है। 16 अगस्त 2017 को नाबालिग स्कूल जा रही थी। रास्ते में उसे पड़ोस में रहने वाला जमील अली मिला। जमील ने नाबालिग को लड्डू दिया। लड्डू खाने के बाद पीड़िता बेहोश हो गई। इसके बाद जमील उसे अगवा कर अजमेर ले गया। वहां नाबालिग के साथ दुष्कर्म किया। नाबालिग के परिजनों ने मामले की रिपोर्ट पुलिस में दर्ज कराई। पुलिस ने रिपोर्ट के आधार पर जमील को गिरफ्तार कर नाबालिग छात्रा को बरामद कर लिया। इसके बाद नाबालिग को अगवा कर दुष्कर्म करने की धाराओं में जमील को जेल भेज दिया गया। मामले की अंतिम सुनवाई विशेष पॉक्सो अदालत तृतीय के न्यायाधीश तेंद्रपाल की अदालत में चली। दोनों पक्षों की ओर से पेश सबूत और गवाहों के बयान के आधार पर आठ फरवरी को जमील को दोषी करार दिया गया था। शुक्रवार को सजा पर सुनवाई करते हुए अदालत ने जमील को सात साल कैद सजा सुनाई।

हत्या व लूटपाट के आरोप में 41 लोगों को जेल

देवरिया। उत्तर प्रदेश में देवरिया की एक सेशन अदालत ने शुक्रवार को हत्या और लूटपाट के मामले में दोनों तरफ से क्रास केस के मामले में 41 आरोपियों को दोषी पाये जाने पर सजा सुनाकर जेल भेज दिया।

सहायक शासकीय अधिवक्ता नितेश पाण्डेय ने बताया कि आज करीब उन्नतीस वर्ष पूर्व खानपान थाना क्षेत्र के बलुअन खास गांव में सायकिल से टक्कर के मामले में दो पक्षों में विवाद हो गया था, जिसमें एक पक्ष के तरफ से काम पार थाने में धारा 395,397 आईपीसी में कुल 59 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था। पाण्डेय ने बताया कि मुकदमा वादी अजय कुमार श्रीवास्तव ने दिये गये तहरीर में कहा था कि वह 17 जनवरी 1995 को अपने मोटरसायकिल से बाजार जा रहे थे कि रास्ते मे छोटेलाल के साइकिल से टक्कर हो गई।

छोटेलाल आईपीएफ के सदस्य थे ,दोनों लोगों के बीच कहा सुनी हुई तथा उस समय लोगों ने बीच बचाव कर मामले को शांत करा दिया था। उन्होंने बताया कि उसी रात आईपीएफ की एक मीटिंग के बाद 18 जनवरी 1995 को सुबह करीब 7.20 बजे करीब सौ डेढ़ सौ की संख्या में लोगों ने नारा लगाते हुए अजय लाल के घर हमला कर दिए, उनके हाथ भाला, लाठी, डण्डा ,इट पत्थर ,बम थे। उनके घर के लोग डर कर घर में व छत के ऊपर भागे ।

इस हमले से गांव के अन्य लोग अपने घर मे भागे। उन्होंने बताया कि पूरा गांव भय ,आतंक से कांप गया इन लोगों ने अजय लाल के घर के अलावा बगल के हरदेव भगत व रामनाथ के घर भी लूट पाट व मारपीट की। सहायक शासकीय अधिवक्ता ने बताया कि इनके हमले से दर्जनों लोग घायल हो गये ,जिनमे कुछ एक लोगों को फ्रेक्चर भी हुआ। अपने बचाव में अजय लाल ने अपने बाबा के नाम से लाइसेंसी दोनाली बन्दूक से फायर किया जिससे कुछ लोगों को चोटे आई थी।

इस फायरिंग में हमलावर के तरफ से दो लोगो की मृत्यु हो गई थी। इस घटना में दोनों तरफ से मुकदमा दर्ज हुआ था। हत्या के मामले में 6 आरोपी बने थे। जिसमें एक बाल अपचारी था तथा एक आरोपी की विचारण के दौरान मौत हो गई थी। तीन आरोपी साक्ष्य के अभाव में बरी कर दिये गये।

रायबरेली: पॉक्सो एक्ट के तीन वांछित आरोपी गिरफ्तार

रायबरेली। उत्तर प्रदेश में रायबरेली के दो अलग अलग इलाकों से पॉक्सो एक्ट में वांछित तीन आरोपियों को पुलिस ने आज गिरफ्तार किया ।

पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार जगतपुर इलाके से 16 वर्षीय स्कूली छात्रा के साथ बलात्कार के दो आरोपियों को पुलिस ने आज थाना क्षेत्र से गिरफ्तार किया ।

बताया गया कि आरोप है कि करीब ढाई माह पहले जब पीड़िता स्कूल से आ रही थी तभी भगौती के दो लड़के रामकरन और रामचन्दर ने उसके साथ बलात्कार किया था। घटना के बाद दोनो आरोपी फरार हो गए। जिसके बाद से पुलिस इन दोनों आरोपियों को सरगर्मी से तलाश रही थी। जिसके बाद पुलिस टीम दोनों को लगातार तलाश कर रही थी जो आज पुलिस के हत्थे चढ़ गए।

दूसरे वांछित आरोपी को नसीराबाद इलाके से नाबालिग लड़की के अपहरण के आरोप में पॉक्सो अधिनियम के तहत गिरफ्तार किया गया है। बताया गया कि सुल्तान अली ने नाबालिग पीड़िता का अपहरण किया था। पुलिस ने पीड़िता को बरामद कर लिया था लेकिन आरोपी घटना के बाद से फरार चल रहा था।

व्यवस्थाएं देखने निकले डीआईजी झांसी

झांसी। उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती बोर्ड की ओर से होने जा रही भर्ती परीक्षा-2024 को लेकर झांसी जिला एवं पुलिस प्रशासन पूरी मुस्तैदी से तैयारियों में जुटा है और इसी क्रम में शुक्रवार को पुलिस उपमहानिरीक्षक (डीआईजी) झांसी रेंज ने यहां परीक्षा केंद्रों और कंट्रोल रूम की समीक्षा की तथा सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

डीआईजी नैथानी ने हाफिज सिद्दीकी परीक्षा केंद्र पर व्यवस्थाओं के निरीक्षण के बाद कहा कि परीक्षा को लेकर लगभग तैयारियां पूरी की जा चुकी है सभी केंद्रों पर मानक फोर्स ,मजिस्ट्रेट की नियुक्तियां आदि को लेकर तैयारियां पूरी हैं। पुलिस की ओर से सुरक्षा की तैयारियां भी पूरी है ,एलआईयू सक्रिय है। इस तरह की परीक्षाओं में सक्रिय रहने वाले सॉल्वर गैंग पर निगरानी रखी जा रही है इनमें से कई के खिलाफ कार्रवाइंयां भी की गयीं हैं। इसके अलावा बस स्टैंड और रेलवे स्टेशनों पर आने वाले अभ्यर्थियों को किसी तरह की परेशानी न हो इसके लिए पर्याप्त पुलिस बल तैनात है साथ ही रेलवे स्टेशन पर अभ्यर्थियों की मदद के लिए हेल्प डेस्क लगायी गयी है।

उन्होंने बताया कि परीक्षा के दौरान पुलिस की कुछ पार्टियां मोबाइल रहेंगी सभी को जरूरी दिशा निर्देश दे दिये गये हैं।

बोर्ड की ओर से परीक्षा में जिन भी गैजेट्स पर रोक लगायी गयी है उससे संबंधित पोस्टर परीक्षा केंद्रों पर लगाये जा रहे हैं। परीक्षा की शुचिता बनाये रखने के लिए सभी केंद्रों की निगरानी सीसीटीवी कैमरों से की जायेगी।

4 टाइमर बम के साथ पकड़ा गया संदिग्ध

एसटीएफ चीफ अमिताभ यश बोले-मुजफ्फरनगर दंगों के समय भी ऐसे बम बनाए थे

एजेंसी

मुजफ्फरनगर। यूपी के मुजफ्फरनगर में एसटीएफ ने शुक्रवार सुबह एक संदिग्ध को गिरफ्तार किया। उसके पास से 4 टाइमर बम (ढ्ढश्वष्ठ) मिले हैं। उससे पूछताछ की जा रही है। मेरठ से बम स्क्वायड को भी बुलाया गया, जिसने बमों को डिफ्यूज किया। इन बमों का इस्तेमाल किसी बड़ी प्लानिंग में किया जाना था। मामला खालापार इलाके का है।

एसटीएफ चीफ अमिताभ यश ने बताया, 4 बमों के साथ संदिग्ध को गिरफ्तार किया गया। इन बमों को रिमोट और टाइम से टिगर किया जा सकता है। जानकारी मिली है कि जिन लोगों ने इन बमों को बनाया है, उन्होंने मुजफ्फरनगर दंगों के समय भी ऐसे ही बम बनाए थे। ये बम लोगों को बांटे भी गए थे। आरोपी से पूछताछ की जा रही है। जो भी चीजें सामने आएगी, उनके आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

वहीं, एसटीएफ सूत्रों के मुताबिक, गिरफ्तार संदिग्ध जावेद ने एसटीएफ को बताया कि ये बम एक महिला ने ऑर्डर देकर बनवाए थे। अब उस महिला की तलाश की जा रही है। जावेद इससे पहले भी टाइमर बम बना चुका था। उसकी ननिहाल नेपाल में है। पुलिस अब उसका नेपाल कनेक्शन भी खंगाल रही है।

जावेद पहले रेडियो ठीक करने का काम भी करता था

बता दें, जावेद के दादा का पटाखे बनाने का काम था। बताया जा रहा है कि दादा से ही जावेद ने बम बनाना सीखा।

इसके बाद उसने आईईडी बम बनाना सीखा। एसटीएफ के एडिशनल एसपी ब्रजेश कुमार सिंह ने बताया, जावेद पहले रेडियो ठीक करने का काम भी करता था। इसलिए उसको मशीनों के बारे में अच्छी-खासी नॉलेज भी है।

पूछताछ में जावेद ने इससे पहले भी टाइमर बम बनाने की बात कबूल की है। फिलहाल इंटेलिजेंस ब्यूरो और ्रञ्जस् की टीमें भी जावेद से पूछताछ कर रही हैं। जावेद शहर कोतवाली क्षेत्र के मिमलाना रोड का रहने वाला है।

ऐसे एसटीएफ की गिरफ्त में आया जावेद

दरअसल, एसटीएफ को मुखबिर से सूचना मिली कि जावेद नाम का एक व्यक्ति काली नदी के न्याजूपुरा पुल के पास आने वाला है। उसके पास कुछ संदिग्ध सामान है। इस पर एसटीएफ ने जावेद को तुरंत मौके पर पकड़ लिया। उसके पास एक नीले रंग का बैग था। जब एसटीएफ ने बैग को खोलकर देखा गया, तो उसके अंदर एक कैंपस शूज का डिब्बा मिला। इसके अंदर 4 टाइमर बम मिले। इस पर जावेद को गिरफ्तार कर लिया गया। साथ ही बम डिस्पोजल स्क्वायड को भी मौके पर बुलाया गया।

बाराबंकी : अवैध संबंधों के शक में पति ने काटा पत्नी का गला

बाराबंकी। उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले में अवैध संबंधों के शंक में शुक्रवार को एक खौफनाक घटना सामने आई।

अवैध संबंध के शक में पति अपनी पत्नी की गर्दन काट कर एक हाथ में उसका कटा सिर व दूसरे हाथ में धारदार हथियार लेकर थाने जा पहुंचा, पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार फतेहपुर कोतवाली क्षेत्र के इसरौली चौकी के बसरा गांव का है। अनिल कनौजिया राजगीर का काम करता था। उसे पत्नी के अवैध संबंध होने का शक था इसको लेकर कई बार पति-पत्नी में विवाद भी हुआ। आज सुबह अनिल ने पत्नी वंदना (26) की बांके से गला काटकर हत्या कर दी।

उसके बाद सिर को धड़ से अलग कर एक हाथ में कटा सिर और दूसरे हाथ में बांका लेकर इसरौली चौकी पहुंचा , जिसे देख पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर उच्चाधिकारियों को सूचना देने के साथ जांच शुरू की।

एएसपी उत्तरी चिरंजीवी नाथ सिन्हा ने बताया पत्नी के हत्यारोपी पति को गिरफ्तार कर जांच की जा रही है।

बुलंदशहर: पुलिस टीम पर जानलेवा हमले के दोषी को सजा और जुर्माना

बुलंदशहर । उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के न्यायालय ने पुलिस टीम पर जानलेवा हमला करने वाले अभियुक्त को दोष साबित होने के बाद तीन वर्ष छः माह का कारावास व 1000 के जुर्माने से शुक्रवार को दंडित किया गया। एडीजीसी प्रवेंद्र प्रताप ने बताया कि गत वर्ष 2019 में जहांगीराबाद कोतवाली के अंतर्गत अमरगढ़ रोड पर अभियुक्त सचिन पुत्र वेद प्रकाश निवासी मोहल्ला रोगन ग्राम कस्बा जहांगीराबाद द्वारा पुलिस पर जानलेवा फायर किया गया था। जिसे बाद में पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था।

फर्रुखाबाद में भारतीय किसान यूनियन (टिकैतगुट) ने सौंपा ज्ञापन

फर्रुखाबाद। उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में भारतीय किसान यूनियन टिकैतगुट के फर्रुखाबाद मंडल उपाध्यक्ष प्रभाकांत मिश्रा के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन करते हुए शुक्रवार को जिले के किसानों की समस्याओं को लेकर एक ज्ञापन अपर जिलाधिकारी सुभाष चंद्र प्रजापति को दिया।

यह जानकारी भारतीय किसान यूनियन सूत्रों ने देते हुए बताया कि देश के किसान आंदोलन को लेकर सजग पुलिस प्रशासन की मौजूदगी में आज यूनियन के मंडल अध्यक्ष प्रभाकांत मिश्रा अपने नेकपुर कला आवास से यूनियन कार्यकर्ताओं के साथ प्रदर्शन करते हुए समीपवर्ती एक कोल्ड स्टोरेज के सामने पहुंचे उनकी तो उनकी अचानक तबीयत खराब होने पर उन्होंने जिले के किसानों की नौ सूत्रीय समस्याओं का जिलाधिकारी के नाम संबोधित एक ज्ञापन अपर जिला अधिकारी सुभाष चंद्र प्रजापति को सौंपा।

इस ज्ञापन पर अपर जिलाधिकारी श्री प्रजापति ने किसानों की मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया।

यूनियन के प्रवक्ता ने बताया कि ज्ञापन में फर्रुखाबाद की बाढ़ के दौरान जनहानि एवं फसल हानि का मुआवजा दिये जाने के साथ ही सातनपुर आलू कृषि उत्पादन मंडी समिति में किसाने की फसल की लूट एवं राजेपुर थाना क्षेत्र के ग्राम कमालुद्दीनपुर में खड़ी फसल को जुतवाये जाने आदि की समस्याओं को हल करने की मांग की गई।

फर्रुखाबाद जिले के भारतीय किसान यूनियन टिकैत गुट अध्यक्ष अरविंद शाक्य ने बताया कि दिल्ली बॉर्डर पर किसानों के शुरू आंदोलन को लेकर ,उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर सिसौली में शनिवार को भारतीय किसान यूनियन टिकैत गुट के प्रमुख राकेश टिकैत के नेतृत्व में होने वाली बैठक से मिलने वाले निर्देशों का अनुपालन करने के लिए आज शुक्रवार को फर्रुखाबादयूनियन केपदाधिकारी की एक बैठक,गंगा पांचाल घाट मेला रामनगरिया के किसान यूनियन कार्यालय में मेरी अध्यक्षता में संपन्न हो रही है।

इस अवसर पर मुकेश शर्मा, अभय यादव, जवर सिंह योगेंद्र सिंह दर्जनों की संख्या में यूनियन के कार्यकर्ता पदाधिकारी मौजूद रहे।

युवक की करंट की चपेट में आकर मौत

बांदा। उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के बदौसा थाना क्षेत्र में शुक्रवार को डीजे बजाने गए एक युवक की विद्युत करंट की चपेट में आने से मृत्यु हो गई। पुलिस क्षेत्राधिकार नगर गवेंद्र पाल गौतम ने बताया कि बिसंडा थाना क्षेत्र की ओरन गांव निवासी 22 वर्षीय छोटू पुत्र मोतीलाल बदौसा थाना क्षेत्र की शाहपुर सानी गांव में आयोजित एक दहिवारा कार्यक्रम में डीजे बजाने गया था। जहां डीजे में ओस पड़ते देख मशीनों में पॉलिथीन ढकने के लिए वह ऊपर चढ़ गया और मशीनों में पॉलिथीन बिछाने लगा। इसी दौरान विद्युत करंट की चपेट में आकर वह गंभीर रूप से झुलस किया। जिसे तत्काल उपचार हेतु जिला अस्पताल लाया गया। जहां उसकी मृत्यु हो गई। उन्होंने बताया कि मृतक के शव का पंचायतनामा भरकर पोस्टपार्टम के लिए भेजा गया।

बिजली इंजीनियरों ने किया देशव्यापी प्रदर्शन का दावा

लखनऊ। बिजली कर्मचारियों और इंजीनियरों ने बिजली (संशोधन) विधेयक 2022 और निजीकरण नीतियों के खिलाफ शुक्रवार को देश भर में पैमाने पर प्रदर्शन का दावा किया है। आल इण्डिया पॉवर इंजीनियर्स फेडरेशन के चेयरमैन शैलेन्द्र दुबे और महासचिव रत्नाकर राव ने बयान जारी कर कहा कि बिजली कर्मचारियों और इंजीनियरों की राष्ट्रीय समन्वय समिति के आह्वान पर बिजली कर्मचारियों और इंजीनियरों ने केन्द्र सरकार पर दबाव बनाने के लिए आज सभी राज्यों की राजधानियों, बिजली उपयोगिता मुख्यालयों और परियोजनाओं पर बड़े पैमाने पर प्रदर्शन और विरोध सभाएं की। उन्होने बताया कि हैदराबाद, चेन्नई, बेंगलुरु, विजयवाड़ा, त्रिवेन्द्रम, कोलकाता, लखनऊ, पटियाला, शिमला, चंडीगढ़, देहरादून, जम्मू, श्रीनगर, जबलपुर, भोपाल, रायपुर पुणे, मुंबई,वडोदरा, राजकोट, गुवाहाटी, भुवनेश्वर, शिलांग, रांची, पटना और कई प्रमुख थर्मल पावर स्टेशनों पर बड़े पैमाने पर प्रदर्शन हुए।

दुबे ने आरोप लगाया कि संयुक्त किसान मोर्चा को सरकार की लिखित प्रतिबद्धता के बाद भी बिजली (संशोधन) विधेयक 2022 को रद्द करने की मांगों का पालन नहीं किया गया है। इसके विपरीत, बिजली की सार्वभौमिक पहुंच के अधिकारों पर अंकुश लगाने के लिए उपभोक्ताओं के परिसर में प्रीपेड स्मार्ट मीटर गैरकानूनी तरीके से लगाए गए हैं। बिजली क्षेत्र के निजीकरण की दिशा में अगले कदम के रूप में ट्रांसमिशन सबस्टेशनों की स्थापना के लिए टैरिफ आधारित प्रतिस्पर्धी बोली निर्धारित की गई है।

दस हजार रुपये का इनामिया गैंगेस्टर एक्ट में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

विशाल इंडिया/पुनीत मिश्रा

सीतापुर। पुलिस अधीक्षक चक्रेश मिश्र द्वारा जनपद सीतापुर में अपराध नियंत्रण के दृष्टिगत अपराधियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही एवं वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु जनपदीय पुलिस को निर्देशित किया गया।

पुलिस अधीक्षक के निर्देश के अनुपालन में दिनांक 16फरवरी 2024 को अपर पुलिस अधीक्षक दक्षिणी डॉ.प्रवीण रंजन के निकट पर्यवेक्षण व क्षेत्राधिकारी महमूदाबाद दिनेश शुक्ला के नेतृत्व में थाना महमूदाबाद पुलिस टीम ने थाना महमूदाबाद पर पंजीकृत मु0अ0सं0 435/23 पर आई पी सी की धारा 3(1) यूपी गैगेस्टर एक्ट में वांछित चल रहे दस हजार रुपये के इनामिया अभियुक्त शारूख पुत्र मो0 इरफान नि0 पैगम्बरपुर थाना महमूदाबाद को सिधौली क्रासिंग से गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की।

अभियुक्त शातिर अपराधी हैं,इसके विरुद्ध पूर्व में भी चोरी/नकबजनी जैसे आपराधिक कृत्यो के सम्बन्ध में कई अभियोग पंजीकृत है। अभियुक्त करीब चार माह से वांछित चल रहा था, जिसकी शीघ्रातिशीघ्र गिरफ्तारी सुनिश्चित करने हेतु पुलिस अधीक्षक ने अभियुक्त पर दस हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया था। अभियुक्त द्वारा अपराध से अर्जित संपत्ति का पता लगाकर जब्तीकरण की कार्यवाही की जायेगी। गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध कठोर कार्यवाही हेतु अभियुक्त को सम्बन्धित न्यायालय के समक्ष पेश कर दिया गया। पुलिस के जिम्मेदारों ने बताया कि जनपद में अपराधियों के विरूद्ध कार्यवाही निरन्तर इसी प्रकार प्रचलित रहेगी।

टप्पेबाज महिला को गिरफ्तार कर भेजा जेल

ललितपुर । उत्तर प्रदेश के ललितपुर में शुक्रवार को पुलिस ने एक टप्पेबाज महिला को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। सदर कोतवाली अंतर्गत नेहरूनगर निवासी सुखवती पत्नी सीताराम झा शहर के तुवन मन्दिर प्रांगण में आयोजित हो रही श्रीराम कथा को सुनने गईं थीं, जब वह कथा सुनने में तल्लीन थी तभी उसके पास में बैठी हुई टप्पेबाज महिला उसका पर्स लेकर भाग गई, जिसमें महिला का मंगलसूत्र रखा हुआ था। जब महिला ने देखा तो उसका पर्स वहां नहीं मिला, तब उसने आसपास बैठी महिलाओं से अपने पर्स के बारे में पूछा, लेकिन उसका पर्स नहीं मिला।

डीएम एसपी ने पुलिस भर्ती परीक्षा के दृष्टिगत परीक्षा केन्द्रों का किया निरीक्षण

ललितपुर। परीक्षा केन्द्रों पर लगे सीसीटीवी कैमरे, परीक्षा प्रबन्धन, सुरक्षा व्यवस्था को चैक कर दिये दिशा निर्देश।

पुलिस भर्ती परीक्षा को निष्पक्ष एवं पारदर्शी रूप से सकुशल सम्पन्न कराने हेतु तैयारियों की समीक्षा कर दिये आवश्यक दिशा-निर्देश । जिलाधिकारी अक्षय त्रिपाठी व पुलिस अधीक्षक मो0 मुश्ताक द्वारा आगामी पुलिस भर्ती परीक्षा के दृष्टिगत परीक्षा केन्द्रों 1.बुन्देल खण्ड इण्टर कालेज जाखलौन 2. किसान इण्टर कालेज विरधा रघुवीर सिंह इण्टर कालेज महरौनी का निरीक्षण किया गया । जनपद में आगामी पुलिस भर्ती परीक्षा दिनांक 17.02.2024 व 18.02.2024 को 02-02 पालियां कुल 04 पालियों में आयोजित होना प्रस्तावित है तथा जनपद में पुलिस भर्ती परीक्षा हेतु कुल 14 परीक्षा केन्द्र बनाये गये हैं जिसमें से 09 परीक्षा केन्द्र थाना कोतवाली क्षेत्र, 02 परीक्षा केन्द्र थाना महरौनी क्षेत्र व 01- 01 परीक्षा केन्द्र थाना जाखलौन, थाना जखौरा, थाना तालबेहट क्षेत्र में बनाये गये है जिसके दृष्टिगत जिलाधिकारी ललितपुर व पुलिस अधीक्षक ललितपुर द्वारा परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण कर सम्बन्धित को आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये।

कानपुर में भाजपा के राज्यमंत्री के नाम पर 51 लाख की ठगी

कानपुर। कानपुर में भाजपा के राज्यमंत्री के नाम पर एक केमिकल व्यापारी से 51 लाख रुपए की ठगी हो गई।

व्यापारी ने आरोप लगाया है कि भाजपा के राज्यमंत्री अजीत पाल ने ठगी करने वाले का पक्ष लेते हुए अपने घर बुलाकर धमकाया और पैसे नहीं मांगने का दबाव बनाया। व्यापारी ने अल्पसंख्यक आयोग और पुलिस कमिश्नर से मामले की शिकायत की है। अल्पसंख्यक आयोग ने मामले का संज्ञान लेते हुए जांच बैठा दी है। फजलगंज दिलबाग रोज गार्डन के रहने वाले केमिकल कारोबारी हरजीत सिंह ने बताया कि वह केमिकल कारोबारी हैं।

उनका काकादेव में रहने वाले पीयूष सिंह चौहान से कारोबार के सिलसिले में लेनदेन चलता था, लेकिन पीयूष सिंह ने 20 लाख रुपए नगद और करीब 31 लाख रुपए का माल ले रखा था। रुपए मांगने पर पीयूष ने काकादेव में रहने वाले राज्यमंत्री इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी अजीत पाल ने अपने घर पर बुलाया और धमकी देते हुए कहा कि अगर रुपए के लिए दबाव बनाया या फिर कहीं शिकायत की तो ठीक नहीं होगा।

इससे सहमें व्यापारी हरजीत सिंह ने मंत्री अजीत पाल और धोखाधड़ी करने वाले पीयूष सिंह चौहान के खिलाफ अल्पसंख्यक आयोग में शिकायत की है। इसके साथ ही पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार से भी मिलकर रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए प्रार्थना पत्र दिया है। काकादेव थाना प्रभारी मानवेंद्र सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। जांच के बाद एफआईआर दर्ज की जाएगी।

शार्ट न्यूज

एसपी ने किया पुलिस लाइन का निरीक्षण

ललितपुर । पुलिस अधीक्षक मो0 मुश्ताक द्वारा शुक्रवार की परेड की सलामी ली गयी इसके उपरांत परेड का निरीक्षण किया गया ।पुलिस लाइन स्थित क्वार्टर गार्द, आरमरी आदि का निरीक्षण कर शस्त्रों की साफ- सफाई हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया गया ।यू0पी0 112 के वाहनों को चेक किया गया तथा यूपी 112 पुलिस कर्मियों को घटना स्थल को सुरक्षित करने का अभ्यास कराया गया तथा यूपी 112 कर्मियों को निर्देशित किया गया कि इवेन्ट की सूचना पर शीघ्र अतिशीघ्र पहुंचकर पीडित को हरसंभव मदद करें तथा परेड में शामिल पुलिस कार्मियों से उनकी समस्याओं को सुनकर सम्बन्धित को निस्तारण करने हेतु निर्देशित किया गया। डायल 112, स्टोर, बैरको,पुलिस कैटींन एवं पुलिस लाइन की विभिन्न मदों को चेक कर सम्बन्धित को आवश्यक दिशा- निर्देश दिये गये। संबंधित को ड्रोन कैमरे से प्रमुख स्थानों पर निगरानी करने के निर्देश दिए गए।

चोरी करने के आरोप में महिला गिरफ्तार

ललितपुर ।पुलिस अधीक्षक मो0 मुश्ताक के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार व क्षेत्राधिकारी सदर अभय नारायण राय के कुशल पर्यवेक्षण में जनपद में अपराध रोकथाम, घटनाओ के सफल अनावरण हेतु थाना कोतवाली पुलिस द्वारा मु0अ0सं0 96/24 धारा 379 भादवि0 की की वांछित अभियुक्ता अनुष्की उर्फ मुस्कान पत्नी राकेश उर्फ नरेन्द्र राव पुत्री वीरेन्द्र उर्फ भूरे सिंह जाति मराठी उम्र 30 वर्ष निवासी बोदला झौपडपट्टी थाना जगदीशपुरा जिला आगरा को देवगढ रोड ओवर ब्रिज के नीचे शंकर मंदिर के पास थाना कोतवाली से गिरफ्तार किया गया ।अभियुक्ता उपरोक्त के कव्जे से मु0अ0सं0 96/2024 घटना में चोरी के पीली धातु के आभूषण व नगदी 3050/- रू0 आदि बरामद हुआ ।बरामद माल के आधार पर मुकदमा उपरोक्त में धारा 411/413/414 भादवि की बढोत्तरी कर अभियुक्ता को मा0 न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है।

जिला बदर अभियुक्त को किया गिरफ्तार

ललितपुर ।पुलिस अधीक्षक मो0 मुश्ताक के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार व क्षेत्राधिकारी सदर अभय नारायण राय के कुशल पर्यवेक्षण में जनपद में अपराध रोकथाम, वांछित अभियुक्त की गिरफ्तारी व तलाश के क्रम में थाना कोतवाली पुलिस द्वारा मय टीम के साथ संयुक्त रूप से मुखबिर की सूचना पर 15.02..2024 को जिला बदर अपराधी करन कुशवाहा पुत्र ताराचन्द्र कुशवाहा निवासी गुरद्वारे वाली गली मुहल्ला लक्ष्मीपुरा थाना कोतवाली उम्र 24 को गिरफ्तार किया गया , जिसके सम्बन्ध में थाना कोतवाली पर मु0अ0सं0- 99/24 धारा 3/10 उ0प्र0 गुण्डा नियत्रंण अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया गया तथा अभि0 को मा0 न्यायालय के समक्ष पेश किया गया है ।गिरफ्तार करने वाली टीम प्रभारी निरीक्षक शशिभूषण सिंह उ0नि0 अंकित कौशिक ट0उ0नि0 सोनू कुमार का0 हिमाँशू गुप्ता का0 गणेश कुशवाहा आदि शामिल रहे।

मृतक होमगार्ड की आश्रित पत्नी को बैंक ने उपलब्ध कराया चालिस लाख की चेक

विशाल इंडिया/पुनीत मिश्रा

सीतापुर। जिला कमाण्डेन्ट होमगार्ड सीतापुर दिनेश ढींगरा ने अवगत कराया है कि जनपद की कम्पनी सकरन में तैनात होमगार्ड अतुल कुमार मिश्र, जो डायल 112 की ड्यूटी पर थे, दिनांक- 27 दिसम्बर 2023 को सायंकाल ड्यूटी से घर वापस जाते समय रास्ते में अज्ञात वाहन से टक्कर हो जाने से उनका स्वर्गवास हो गया। मृतक होमगार्ड अतुल कुमार मिश्र का खाता बैक में खुला होने के कारण दुर्घटना बीमा लाभ के अन्तर्गत मृत्यु के फलस्वरूप सम्बन्धित बैक द्वारा रूपया चालिस लाख का चेक होमगार्डस की आश्रिता पत्नी किरन देवी को जिलाधिकारी सीतापुर अनुज सिंह के उपस्थित में कलेक्ट्रेट में हस्तगत किया गया। इस अवसर पर अतिरिक्त मजिस्ट्रेट राखी वर्मा, दिनेश ढींगरा, जिला कमाण्डेन्ट होमगार्डस, सीतापुर, प्रदीप गुप्ता, कलेक्ट्रर हेड, सीतापुर, अभय श्रीवास्तव, शाखा प्रबंधक, एच0डी0एफ0 सी0 बैक, लहरपुर, सीतापुर विकास चौधरी, राकेश कुमार, जिला कमाण्डेन्ट के सहायक मो0 नसीम खाँ एवं श्रीकृष्ण रावत, वैतनिक प्लाटून कमाण्डर व हिरावल अब्बास, ब्लाक आर्गनाइजर एवं अन्य उपस्थित थे।

गोरखपुर में युवक की चाकू से गोदकर हत्या

गोरखपुर। गोरखपुर में एक युवक की चाकू से गोदकर हत्या कर दी गई। हमलावरों ने उस पर चाकू से ताबड़तोड़ कई वार किए। बाद में उसकी हाथ की कलाई भी काट दी। हत्या की वजह जुआ खेलने के दौरान हुआ विवाद बताया जा रहा है। छानबीन में सामने आया कि पीयूष का दोपहर में विवाद हुआ था। उसने कुछ लड़कों को पीट दिया था। फिर रात में जुआ खेलने के दौरान दोबारा विवाद हुआ था ।आशंका है कि उसी विवाद में उसकी हत्या कर दी गई है। यह घटना गुलरिहा इलाके के खजांची चौराहा स्थित बजरंग धाम कॉलोनी की है। गुलरिहा पुलिस पोस्टमॉर्टम करवा रही है। स्क्नार्थ जितेंद्र कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि घटना में शामिल आरोपियों को पकड़ लिया जाएगा। कुछ नाम सामने आए हैं। पूछताछ जारी है। दरअसल, गुलरिहा इलाके के खजांची चौराहा के पास स्थित सेमरा शिव मंदिर टोला के रहने वाले जय प्रकाश सिंह का बेटा पीयूष सिंह (35) का गुरुवार दोपहर किसी से विवाद हो गया था। उस समय तो मामला किसी तरह से शांत हो गया था। लेकिन, गुरुवार की रात में उसी मोहल्ले में जुआ खेलते के दौरान एक बार फिर झगड़ा हो गया। इसमें आरोपियों ने पीयूष को ताबड़तोड़ चाकू मारे। सांसे चलती देखकर की हाथ की कलाई भी काट दी। इसके बाद सब वहां से भाग गए।

अपहरण का आरोपी मुठभेड़ में गिरफ्तार

इटावा। इटावा के चकरनगर में छात्र का अपहरण करने वाले वांछित को पुलिस ने शुक्रवार को मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार किया है। पुलिस के रोके जाने पर आरोपी ने पुलिस पर दो फायर किए। पुलिस ने आरोपी पर गोली चलाई। जिसमें आरोपी के पैर गोली लग गई। आरोपी के पास से एक अवैध तमंचा, 2 खोखा व 2 जिन्दा कारतूस 315 बोर बरामद किए गए हैं। थाना चकरनगर क्षेत्र के किराना व्यवसायी योगेश गुप्ता ने पुलिस को सूचना दी कि उनका 13 वर्षीय पुत्र कर्तव्य गुप्ता सुबह साढ़े आठ बजे साइकिल से स्कूल जा रहा था। तभी सफेद रंग की कार से अज्ञात युवकों ने उसका अपहरण कर लिया। भरेह थाना पुलिस के दो सिपाहियों ने कार का पीछा किया। जिसके बाद आरोपियों ने अपने आप को घिरता देख गाड़ी को गड्ढे में कूदा दिया। और बच्चे को सकुशल बरामद किया गया था। गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ व साक्ष्य संकलन के आधार पर आरोपी जीतू उर्फ जितेन्द्र पुत्र मुन्नी सिंह राजावत एवं रामनिवास पुत्र रामकुमार का नाम प्रकाश में आया था। जिनकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस निरन्तर प्रयासरत थी।

कनाडा में फिर हुआ हिंदू मंदिरों पर हमला

टोरंटो । इंडो-कनाडाई समुदाय ने ओंटारियो प्रांत में हिंदू मंदिरों को निशाना बनाकर लगातार हो रही चोरियों पर निराशा व्यक्त की है। ओकविले शहर के वैष्णो देवी मंदिर में अज्ञात व्यक्तियों ने मंदिर में सेंध लगाई, मूर्तियों के सामने रखे दान बक्सों से पर्याप्त मात्रा में नकदी ले ली और कार्यालयों में भी तोड़फोड़ की और यहां तक कि वीडियो रिकॉर्डिंग के लिए इस्तेमाल किए गए उपकरण भी चुरा लिए। सुरक्षा उद्देश्यों के लिए बाहरी और आंतरिक क्लोज-सर्किट कैमरे लगाए गए। मंदिर के अध्यक्ष केशव अग्निहोत्री ने कहा कि चोरी से समुदाय स्तब्ध है। उन्होंने कहा कि हर कोई सोच रहा है कि एक धार्मिक स्थल पर ऐसी घटना क्यों होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हॉल्टन क्षेत्रीय पुलिस के अधिकारियों ने मंदिर का दौरा किया और अपराध की जांच कर रहे हैं। हालाँकि, इससे समुदाय के भीतर बढ़ती चिंता कम नहीं हुई है। हमारे संस्थान एक आसान लक्ष्य बन रहे हैं। यह विचार नेशनल एलायंस ऑफ इंडो-कैनेडियन्स द्वारा साझा किया गया था, जिसका मानना था कि हिंदू पूजा स्थलों की लक्षित चोरी और बर्बरता की सभी सही सोच वाले कनाडाई लोगों द्वारा निंदा की जानी चाहिए। समुदाय की नेता रुचि वाली ने घुसपैठ के बारे में पोस्ट कर पूछा कि रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस या आरसीएमपी कब इस चल रहे मुद्दे का समाधान करेगी और इसे एक अनोखी घटना के रूप में नहीं मानेगी?

पश्चिम अफीका और साहेल में चरमपंथी समूह इस्लामिक स्टेट का प्रभाव बढ़ता जा रहा

संयुक्त राष्ट्र । संयुक्त राष्ट्र के आतंकवाद रोधी कार्यालय के प्रमुख ने कहा कि पश्चिम अफ्रीका और साहेल में राजनीतिक अस्थिरता के बीच चरमपंथी समूह इस्लामिक स्टेट एक बढ़ता हुआ खतरा बना है। व्लादिमीर वोरोन्कोव ने संयुक्त राष्ट्र के निष्कर्षों को दोहराया कि खतरे का मुकाबला करने में संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों द्वारा महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद आईएस खासकर संघर्षरत क्षेत्रों में, अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा बना हुआ है। वोरोन्कोव ने कहा कि समूह ने इराक और सीरिया के साथ-साथ दक्षिण पूर्व एशिया में अपने पूर्व गढ़ों में भी अभियान तेज कर दिया है। वोरोन्कोव ने बताया कि अफ्रीका महाद्वीप में स्थित साहेल क्षेत्र और पश्चिमी अफ्रीका की स्थिति खराब हो गई है और यह ''अधिक जटिल होती जा रही है, क्योंकि स्थानीय जातीय व क्षेत्रीय विवाद चरमपंथी समूह के एजेंडे और संचालन के अनुकूल हैं।

नेपाल पुलिस ने 11 भारतीय बंधक मुक्त कराए

काठमांडू । नेपाल पुलिस ने मानव तस्करी गिरोह का भंडाफोड़ कर अमेरिका भेजने के नाम पर दो सप्ताह से बंधक बनाकर रखे गए 11 भारतीय व्य?क्तियों को मुक्त कराया। मामले में आठ भारतीय माफिया सदस्यों के साथ नेपाली नागरिकों को गिरफ्तार किया गया। नेपाल पुलिस ने इसे ऑपरेशन डंकी नाम दिया क्योंकि यह मामला अभिनेता शाहरुख खान की 2023 की फिल्म डंकी में दिखाई गई स्थिति के समान था। बचाए गए व्यक्ति और माफिया सदस्य ज्यादातर भारतीय राज्यों पंजाब और हरियाणा से आए थे। पुलिस ने बताया कि 11 लोगों को काठमांडू के बाहरी इलाके में दो सप्ताह से अधिक समय तक किराए के एक घर में बंधक बनाकर रखा गया था। गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए धोबीखोला कॉरिडोर, रातोपुल में एक नेपाली नागरिक के निजी आवास पर छापा मारा और 11 भारतीय नागरिकों को मुक्त कराया, जिन्हें मेक्सिको के रास्ते अमेरिका भेजने के बहाने बंधक बना लिया गया था।

एसपीएफ इजराइल-हमास संघर्ष पर विरोध प्रदर्शनों को नहीं देगा अनुमति

सिंगापुर सिटी । सिंगापुर बोटेनिक गार्डन में सप्ताहांत पर मार्च निकालने के ऑनलाइन आह्वान के बीच सिंगापुर पुलिस बल (एसपीएफ) इजराइल-हमास युद्ध से संबंधित विरोध-प्रदर्शनों को अनुमति नहीं देने के अपने रुख पर बरकरार है। सिंगापुर बोटेनिक गार्डन, ब्रिटेन और अमेरिका दूतावास के निकट एक विशाल पार्क है, जहां अधिकतर राजनयिक सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं। पुलिस ने बताया कि वह इजराइल-हमास संघर्ष पर वॉक-आउट सिंगापुर नाम के एक कार्यक्रम के लिए सोशल मीडिया पर चलाए जा रहे अभियान से भली भांति वाकिफ है। एसपीएफ ने बताया कि पुलिस ने आयोजक से संपर्क किया और इस मामले पर उसे नसीहत दी गई है। एक खबर में बताया गया है ?कि इस तरह के आयोजनों के लिए पुलिस की मंजूरी की आवश्यकता होती है। पुलिस ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन एक अपराध है। इस सप्ताह की शुरुआत में अधिकारियों ने बताया था कि उन्हें सिंगापुर एयरशो में इजराइल के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के आह्वान के बारे में जानकारी है और उन्होंने चेतावनी जारी कर कहा कि बिना मंजूरी के इस तरह की सार्वजनिक सभा या जुलूस का आयोजन या उसमें भाग लेना गैरकानूनी है। सिंगापुर में अगले मंगलवार से होने वाले छह दिवसीय एयर शो में इजराइली रक्षा दल हिस्सा ले रहा है।

रूस का उपग्रह रोधी परमाणु क्षमता विकसित करना चिंताजनक : व्हाइट हाउस

मास्को । रूस द्वारा उपग्रह रोधी परमाणु क्षमता विकसित करना परेशान करने वाला हो सकता है लेकिन यह किसी की भी सुरक्षा के लिए खतरा नहीं है क्योंकि इसे अभी अमल में नहीं लाया गया है। व्हाइट हाउस ने यह जानकारी दी। यहां व्हाइट हाउस में संवाददाताओं को राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में रणनीतिक संचार के समन्वयक जॉन किर्बी ने बताया कि यह क्षमता सक्रिय नहीं है। उन्होंने कहा कि हम किसी एक हथियार के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, जिसे इंसानों पर हमले या फिर पृथ्वी पर तबाही मचाने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। हम रूसी गतिविधियों पर करीब से नजर रखे हुए हैं और हम इसे गंभीरता से लेते रहेंगे। किर्बी ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन इस बात से भलीभांति वाकिफ हैं और उनके राष्ट्रीय सुरक्षा दल को नियमित रूप से जानकारी दी जा रही है। किर्बी ने कहा कि उन्होंने शुरुआत में ही कई निर्देश दिये हैं, जिसमें सांसदों को जानकारी देना, हमारे सहयोगियों और हमारे साझेदारों के साथ-साथ रूस से सीधे राजनयिक जुड़ाव जैसी चीजें शामिल हैं। एक दिन पहले हाउस इंटेलिजेंस कमेटी के अध्यक्ष माइक टर्नर ने बाइडन प्रशासन से खतरे का विवरण सार्वजनिक करने का आग्रह किया था।

ब्राजील पुलिस ने पूर्व राष्ट्रपति बोल्सोनारो के छोटे बेटे को आरोपी बनाया

ब्राजीलिया । ब्राजील पुलिस ने कथित धोखाधड़ी के मामले में पूर्व राष्ट्रपति जायर बोल्सोनारो के बेटे छोटे बेटे को आरोपी बनाया है। ब्राजील के संघीय जिला क्षेत्र की पुलिस ने एक बयान में कहा कि जायर रेनन बोल्सोनारो और उनके एक मित्र कपटपूर्ण गलतबयानी, बैंक ऋण अनुरोध के संबंध में फर्जी दस्तावेजों के उपयोग और धनशोधन के संदिग्ध हैं। पुलिस ने विस्तृत विवरण देने से इनकार कर दिया। अगस्त 2023 में पुलिस द्वारा कुछ दस्तावेज और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जब्त किए जाने के बाद से जायर रेनन कोई भी गलत काम से इनकार करते रहे हैं। ब्राजील पुलिस ने इस महीने की शुरुआत में पूर्व राष्ट्रपति बोल्सोनारो के शीर्ष सहयोगियों के घरों और कार्यालयों पर छापा मारा था और एक मामले की जांच के तहत बोल्सोनारो का पासपोर्ट जब्त कर लिया था। इस मामले में आरोप लगाया गया कि बोल्सोनारो ने आठ जनवरी 2023 को नए राष्ट्रपति के तौर पर शपथ लेने वाले लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा को हटाने के लिए तख्तापलट की साजिश रची थी।

कैंसर का टीका बनने के करीब पहुंचे रुसी वैज्ञानिक, पुतिन ने किया दावा

मास्को । रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कैंसर के इलाज को लेकर एक बड़ा दावा किया। पुतिन ने दावा किया कि उनके देश के वैज्ञानिक कैंसर मरीजों के लिए वैक्सीन बनाने के बेहद करीब पहुंच गए हैं। रूसी राष्ट्रपति ने कैंसर वैक्सीन के जल्द मरीजों के लिए उपलब्ध होने का दावा किया। मॉस्को फोरम में रूसी राष्ट्रपति ने कहा, हम तथाकथित कैंसर के टीके और नई पीढ़ी की इम्यूनोमॉड्यूलेटरी दवाओं के निर्माण के बहुत करीब आ गए हैं। मुझे उम्मीद है कि जल्द ही इन्हें व्यक्तिगत चिकित्सा के तरीकों के रूप में प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया जाएगा। हालाँकि, पुतिन का बयान अपने आप में काफी मायने रखता है क्योंकि दुनियाभर के देश कैंसर का इलाज ढूंढने में लगे हुए हैं।

अमेरिका में केडेनी स्पेस सेंटर से एक फाल्कन 9 रॉकेट नोवा सी मून लैंडर के साथ मून मिशन पर निकला।

अमेरिका में लगातार बढ़ रहे भारतीय छात्रों पर हमले, बाइडेन सरकार चिंतित

वाशिंगटन। अमेरिका में राष्ट्रपति जो बाइडेन के आधिकारिक आवास व्हाइट हाउस ने बयान जारी कहा, अमेरिकी सरकार रंग या लिंग के आधार पर होने वाली किसी भी प्रकार की हिंसा को स्वीकार नहीं करेगी। भारतीय व भारतीय मूल के छात्रों पर हमलों को रोकने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। गौर करने वाली बात है कि भारतीय मूल के विधार्थियों अनेक बार हमले हुए, जिस पर रोक लगाने के लिए अमेरिकी सरकार ने अब कठोर कदम उठाने का फैसला किया है। इस साल अमेरिका में हिंसा के शिकार हुए चार भारतीयों को अपनी जान गंवा दी। वहीं, व्हाइट हाउस ने कहा, रंग, लिंग या धर्म के आधार पर होने वाली हिंसा को किसी भी कीमत पर स्वीकारा नहीं जा सकता। बाइडेन सरकार भारत और अमेरिका में रह रहे भारतीय माता-पिता के जेहन में अपने बच्चों को लेकर पैदा हुए भय को दूर करने की दिशा में कड़ी मेहनत कर रही है। इसके साथ ही किर्बी ने कहा, बाइडेन सरकार मौजूदा स्थिति को दुरूस्त करने और भारतीय मूल के विधार्थियों पर हो रहे हमलों को रोकने के लिए पूरा खाका तैयार कर चुकी है, जिस जमीन पर उतारा जाएगा। गौरतलब है कि साल की शुरुआत में हिंसा का शिकार होकर भारतीय मूल के पांच विधार्थी अपनी जान गंवा चुके हैं। वहीं, विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भी इस बात पर विशेष जोर दिया कि उनकी सरकार विदेश में रह रहे भारतीय विधार्थियों की सुरक्षा को लेकर प्रतिबद्ध है। रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका जाकर उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाले भारतीय विधार्थियों की संख्या में 35 फीसद की बढ़ोतरी देखने को मिली है।

जापान के बाद अब ब्रिटेन भी मंदी का शिकार, ये आम लोगों की जिंदगी पर क्या डालेगा प्रभाव

इस्लामाबाद (एजेंसी)। जापान की अर्थव्यवस्था अप्रत्याशित रूप से मंदी की चपेट में आ गई और देश ने दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का अपना स्थान खो दिया है। अब ये खिलाब जर्मनी को मिल गया है। जापान तीसरी अर्थव्यवस्था के पायदान से फिलकर चौथे पर आ गया है। चालू वित्त वर्ष की तिसरी तिमाही में जापान की अर्थव्यवस्था में गिरावट देखने को मिली थी। इस गिरावट की वजह से जापान में मंदी के आसार बने हुए हैं। जापान और ब्रिटेन में क्या हुआ? इसका आम आदमी पर क्या असर हो सकता है इस रिपोर्ट से आपको बताते हैं।

जापान में क्या हुआ

कमजोर घरेलू मांग ने जापान की अर्थव्यवस्था पर असर डाला है और लगातार दूसरी तिमाही में इसमें अप्रत्याशित गिरावट आई है, जिससे इस साल किसी समय अपनी अति-आसान नीति से बाहर निकलने की केंद्रीय बैंक की योजना के बारे में अनिश्चितता बढ़ गई है। जर्मनी अब दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हो गया है। परिवारों और व्यवसायों द्वारा लगातार तीसरी तिमाही में खर्च में कटौती के कारण जापान की अर्थव्यवस्था पिछले साल अमेरिकी डॉलर के मामले में दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने पिछले साल अक्टूबर में अनुमान लगाया था कि अमेरिकी डॉलर में मापने पर जर्मनी दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में जापान से आगे निकलने की संभावना है। हालाँकि, रैंकिंग में बदलाव की घोषणा आईएमएफ द्वारा तभी की जाएगी जब दोनों देश अपने आर्थिक विकास के आंकड़ों के अंतिम संस्करण प्रकाशित कर देंगे। इसने 1980 में अर्थव्यवस्थाओं की तुलना करते हुए डेटा प्रकाशित करना शुरू किया।

ब्रिटेन का क्या हाल है?

ब्रिटेन 2023 की दूसरी छमाही में हल्की मंदी की चपेट में आ गया, जिससे पता चलता है कि प्रधान मंत्री ऋषि सुनक अब तक अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के अपने वादे को पूरा करने में विफल रहे हैं। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के गुरुवार को जारी आंकड़े बताते हैं कि चौथी तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद 0.3त्न गिर गया, जो अर्थशास्त्रियों के पूर्वानुमान से 0.1त्न की गिरावट से अधिक है। इसके बाद पिछले तीन महीनों में अपरिवर्तित 0.1त्न की गिरावट आई, जो अर्थशास्त्रियों की मंदी की तकनीकी परिभाषा, या संकुचन की लगातार दो तिमाहियों को पूरा करती है। पूरे वर्ष अर्थव्यवस्था में अभी भी 0.1त्न की वृद्धि हुई है, यह महामारी के पहले वर्ष को छोड़कर, 2009 के बाद से यूके में देखा गया सबसे धीमा वार्षिक विस्तार था। ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था ने पिछली बार पिछले साल के पहले तीन महीनों में एक चौथाई वृद्धि दर्ज की थी।

आम आदमी के लिए इसके क्या मायने हैं?

मंदी आम आदमी के लिए बुरी है। बीबीसी के मुताबिक, कंपनियों द्वारा कर्मचारियों की छंटनी करने से बेरोजगारी बढ़ सकती है। दूसरों को पदोन्नति पाने या मूल्य वृद्धि के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए पर्याप्त वेतन वृद्धि प्राप्त करना कठिन हो सकता है। हालाँकि, मंदी का दर्द आम तौर पर पूरे समाज में समान रूप से महसूस नहीं किया जाता है, और असमानता बढ़ सकती है। लेख में कहा गया है कि निश्चित आय पर जीवन यापन करने वालों को अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, खासकर अगर सरकारें सार्वजनिक उपयोगिताओं पर खर्च कम कर दें।

हट गया पुतिन के रास्ते का कांटा... नेता नवलनी की मौत

-जेल में सजा के दौरान हुई मौत

मॉस्को (एजेंसी)। जेल में बंद राष्ट्रपति पुतिन के धुरविरोधी नेता एलेक्सी नवलनी की मौत हो गई है। यमालो-नेनेट्स इलाके की जेल सेवा ने इसकी जानकारी दी। जेल में नवलनी अपनी सजा काट रहे थे। रिपोर्ट के अनुसार यमालो-नेनेट्स स्वायत्त जिले की संघीय प्रायद्वीपीय सेवा ने कहा कि नवलनी ने टहलने के बाद अस्वस्थ महसूस किया और लगभग तुरंत होश खो बैठे। रिपोर्ट के मुताबिक मेडिकल स्टाफ को बुलाया गया था, लेकिन वे नवलनी को होश में नहीं ला पा रहे हैं। सरकारी सूत्रों ने कहा कि एलेक्सी नवलनी की मौत के कारण का अभी पता लगाया जा रहा है।

राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के मुखर आलोचक एलेक्सी नवलनी को पिछले साल अगस्त में रूसी अदालत ने 19 साल जेल की सजा सुनाई थी। क्रेमलिन ने दावा किया है कि उस नवलनी की मौत के कारण के बारे में कोई जानकारी नहीं है। पुतिन सरकार ने कहा कि जेल सेवा उसकी मौत के संबंध में सभी जांच कर रही थी। रूस की जांच समिति ने मौत की प्रक्रियात्मक जांच शुरू कर दी है। रिपोर्ट में बताया कि जेल में बंद विपक्षी नेता एलेक्सी नवलनी की मौत एक हत्या है। उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि जेल की स्थितियों के कारण उनकी मौत हुई।

जिस जेल कॉलोनी में नवलनी अपनी सजा काट रहे थे, वह मास्को से लगभग 1,900 किमी. (1,200 मील) उत्तर-पूर्व में यमालो-नेनेट्स क्षेत्र में गंभीर हालातों के लिए कुख्यात है। एलेक्सी नवलनी जनवरी 2021 से रूस में सलाखों के पीछे हैं। तब वह जर्मनी में नर्व एजेंट जहर के हमले से उबरने के बाद मॉस्को लौटे थे। इस हमले के लिए उन्होंने रूस की सरकार को जिम्मेदार ठहराया था। अपनी गिरफ्तारी से पहले उन्होंने आधिकारिक भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान चलाया और क्रेमलिन विरोधी बड़े विरोध प्रदर्शनों का आयोजन किया।

पाकिस्तान में जागा नेता का जमीर, मुझे बईमानी से जिताया गया, मैं सीट छोड़ रहा हूं

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान में हाल ही में आम चुनाव कराए गए। लेकिन अभी तक सरकार का गठन नहीं हुआ है। इमरान खान के समर्थकों ने चुनाव में बड़ी धांधली के आरोप लगाए हैं। ये महज आरोप नहीं हैं बल्कि कई वीडियो भी सामने आए हैं जिसमें खुल्लमखुल्ला धांधली का खेल दिखाई दे रहा है। इस बीच पाकिस्तान के ही एक राजनेता ने मिसाल पेश कर अपनी सीट ही छोड़ दी। नेता का कहना है कि मुझे बेईमानी से जिताया गया इसलिए वह जनता के साथ धोखा नहीं करना चाहता। नेता कहा कि उस सीट पर इमरान खान के समर्थक को ज्यादा वोट मिले थे, फिर भी हेरफेर करके मुझे विजयी घोषित करवा दिया गया। रिपोर्ट के मुताबिक जमीयत-ए-इस्लामी के हाफिज नईम ने प्रांतीय विधानसभा की सीट पीएस-129 अपने विरोधी के लिए छोड़ दी। बता दें कि कराची शहर में यह सीट है। नईम का कहना है कि इस सीट पर इमरान समर्थक उम्मीदवार ने 31 हजार वोट हासिल किए थे वहीं उन्हें 26 हजार वोट ही मिले थे। हालांकि गड़बड़ी करके विरोधी को केवल 11 हजार वोटों पर समेट दिया गया। अब हाफिज नईम के आरोपों से पाकिस्तानी चुनाव आयोग भी सकते में आ गया। पाकिस्तान में सियासी खींचतान के बीच इमरान खान ने अमेरिका से मदद की गुहार लगाई है। उनका कहना है कि निष्पक्ष मतगणना नहीं कराई गई है। इमरान ने कहा कि उनके उम्मीदवारों को जान-बूझकर हरा दिया गया है। इसके बाद अमेरिका को इन चुनावों के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। इमरान का कहना है कि उनके उम्मीदवारों को ज्यादा वोट मिले थे जो कि बाद में कम कर दिए गए। अमेरिका ने भी कहा कि पाकिस्तान के हालात को लेकर चिंता जाहिर की है। बता दें कि चुनाव से पहले ही इमरान खान को कई मामलों में सजा सुना दी गई थी। इसके बाद उनकी पार्टी का नाम और निशान भी छीन लिया गया। इमरान के समर्थकों ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ा था। पाकिस्तान में इमरान खान के समर्थकों को सबसे ज्यादा सीटें हासिल हुई हैं।

इमरान खान की पत्नी बुशरा को जान का खतरा! जेल में बीमार पड़ने के बाद बहन ने किया दावा

इस्लामाबाद(एजेंसी)। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पत्नी बुशरा बीबी का प्रतिनिधित्व करने वाले एक वकील ने जेल अधिकारियों पर उनके भोजन के साथ छेड़छाड़ करने का आरोप लगाया है, जिसके कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। बुशरा बीबी वर्तमान में अपने बानीगाला निवास में कैद हैं, जिसे तोशाखाना मामले में उनके और इमरान खान की सजा और सजा के बाद उप-जेल के रूप में नामित किया गया है। घटना छह दिन पहले की है। बुशरा बीबी के वकील और प्रवक्ता मशाल यूसुफजई ने आरोप लगाया है कि पूर्व प्रथम महिला को असामान्य मसालेदार भोजन खाने के बाद स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हुईं।

यूसुफजई ने एक बयान में कहा कि बुशरा बीबी ने उन्हें बताया कि जेल अधिकारियों ने जानबूझकर भोजन में एक अम्लीय रासायनिक पदार्थ मिलाया था। यूसुफजई ने कहा कि उस भोजन को खाने के बाद उसके मुंह और गले में छाले हो गए हैं और तब से वह बहुत अस्वस्थ है। उन्होंने आगे कहा कि वह देश को इस दुर्भावनापूर्ण कृत्य और इससे होने वाले नुकसान के बारे में बताना चाहती हैं। इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) ने एक्स पर एक पोस्ट में फासीवादी शासन पर इमरान खान की पत्नी पर दुर्भावनापूर्ण हमला करने और उन्हें आवश्यक चिकित्सा सहायता देने से इनकार करने का आरोप लगाया।

पोस्ट में आगे कहा गया कि कोई गलती न करें, इन जघन्य कृत्यों के लिए जिम्मेदार लोगों को न्याय के कटघरे में लाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। पाकिस्तान मजबूत है। इमरान खान मजबूत हैं। पार्टी ने मामले की तात्कालिकता पर जोर देते हुए उच्च न्यायालयों से हस्तक्षेप करने का आग्रह किया है।

मिस्र की नई पहल, फिलिस्तीनियों के लिए स्थापित कर रहा गाजा सीमा के पास आश्रय शिविर

गाजा। मिस्र गाजा सीमा पर एक क्षेत्र तैयार कर रहा है, जहां राफा में इजरायली हमले की स्थिति में फिलीस्तीनियों को समायोजित किया जा सकता है। मिस्र ने ऐसी किसी भी तैयारी से इनकार किया है। उसने बार-बार इस संभावना पर चिंता जताई है कि इजरायल के विनाशकारी गाजा हमले से फिलिस्तीनियों को सिनाई में विस्थापित किया जा सकता है। काहिरा का कहना है कि यह पूरी तरह से अस्वीकार्य होगा। संयुक्त राज्य अमेरिका ने बार-बार कहा है कि वह गाजा से फिलिस्तीनियों के किसी भी विस्थापन का विरोध करेगा। सूत्रों में से एक ने कहा कि मिस्र आशावादी है कि संघर्ष विराम लागू करने के लिए बातचीत से ऐसे किसी भी परिदृश्य से बचा जा सकता है, लेकिन अस्थायी और एहतियाती उपाय के रूप में सीमा पर क्षेत्र स्थापित कर रहा है। तीन सुरक्षा सूत्रों ने कहा कि मिस्र ने कुछ बुनियादी सुविधाओं के साथ एक रेगिस्तानी क्षेत्र तैयार करना शुरू कर दिया है जिसका उपयोग फिलिस्तीनियों को आश्रय देने के लिए किया जा सकता है, उन्होंने जोर देकर कहा कि यह एक आकस्मिक कदम था। इस कहानी के लिए रॉयटर्स ने जिन सूत्रों से बात की, उन्होंने मामले की संवेदनशीलता के कारण नाम बताने से इनकार कर दिया। इज़राइल ने कहा है कि वह राफा में हमास के 卐आखिरी गढ़卐 पर कब्ज़ा करने के लिए आक्रामक हमला करेगा, जहां 1 मिलियन से अधिक फ़िलिस्तीनियों ने उसके विनाशकारी गाजा हमले से शरण मांगी है। इज़राइल ने कहा है कि उसकी सेना रफ़ा से नागरिकों को गाजा पट्टी के अन्य हिस्सों में ले जाने की योजना बना रही है।

पोलैंड सरकार की नीतियों के खिलाफ 5 सौ ट्रैक्टर लेकर पहुंचे किसानों ने दफ्तर पर फेंके अंडे

वारसा(एजेंसी)। पोलैंड के किसान देश की सरकार की नीतियों के खिलाफ लगातार विरोध-प्रदर्शनों कर रहे हैं। वे यूरोपीय यूनियन का भी विरोध कर रहे हैं। बीते दिन विरोध-प्रदर्शन में ईयू के मुख्यालय पर किसानों ने अंडे फेंके। 500 ट्रैक्टर के साथ एक हजार किसान सड़कों पर हैं। 20 फरवरी को देश की सीमाएं सील करने की चेतावनी दी है।पोलैंड के किसानों ने पश्चिमी शहर ब्रोकला में गुरुवार को जमकर विरोध-प्रदर्शन किया। इस दौरान उन्होंने यूरोपीय यूनियन की ऑफिस पर अंडे भी फेंके। आगजनी की और ईयू ग्रीन डील के खिलाफ अपना विरोध दर्ज किया।

किसानों ने यूक्रेन के साथ सभी सीमा क्रॉसिंगों की पूर्ण नाकाबंदी और 20 फरवरी को राजधानी वारसॉ में एक बड़े विरोध प्रदर्शन की योजना बनाई है। किसानों ने ना सिर्फ यूक्रेन की सीमाएं बल्कि कम्यूनिकेशन सेंटर से लेकर ट्रांसशिपमेंट्स, रेलवे स्टेशनों और समुद्री बंदरगाहों को भी सील करने की चेतावनी दी है। यूरोपीय किसान उसी दिन पहले से घोषित स्टार मार्च में सभी दिशाओं से वारसॉ पहुंचेंगे। वहीं 22 फरवरी को चेक गणराज्य के किसान भी मध्य और पूर्वी यूरोप के किसानों के साथ विरोध-प्रदर्शन में शामिल होंगे और अपने देश की सीमाओं को सील करेंगे।

यूरोपीय देश में किसान ट्रैक्टर के साथ पिछले कई दिनों से सड़कों पर हैं। पूरे यूरोप में किसान जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए यूरोपीय यूनियन द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों का विरोध कर रहे हैं। किसानों का कहना है कि पाबंदियों की वजह से किसानी की लागत बढ़ रही है, मुनाफा कम है। पड़ोस के यूक्रेन युद्ध का भी पोलैंड के किसानों पर गंभीर असर पड़ा है। गुरुवार के विरोध-प्रदर्शन में लगभग एक हजार की संख्या में किसान 500 ट्रैक्टर और अन्य कृषि में इस्तेमाल किए जाने वाले वाहनों के साथ सड़क पर उतरे। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट्स में किसानों को पोलिश झंडे, बैनर और कुछ मामलों में फ्लेयर लिए हुए सड़कों पर मार्च करते देखा गया। किसान क्षेत्रीय सरकारी मुख्यालय के सामने इकट्ठा हुए जहां उन्होंने टायरों में आग लगा दी, जिससे पूरा इलाका धुआं-धुआं हो गया। पोलैंड के किसान यूक्रेन से सस्ते खाद्य आयात का विशेष रूप से विरोध कर रहे हैं। मसलन, स्थानीय किसानों का अनाज खरीदे जाने के बजाय सरकार पड़ोसी यूक्रेन से सस्ते में इंपोर्ट करती हैं। यही वजह है कि पिछले शुक्रवार से किसान 30-दिवसीय हड़ताल पर हैं। इस बीच यूक्रेन के साथ लगने वाली कुछ सड़कों को किसान ने ब्लॉक भी कर दिया है।

विलियमसन ने टेस्ट में सबसे तेजी से 32 शतक का रिकार्ड बनाया

नई दिल्ली ।

केन विलियमसन ने बनाया महारिकॉर्ड

न्यूजीलैंड के अनुभवी बल्लेबाज केन विलियमसन ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट सीरीज में शतक लगाने के साथ ही महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर का एक रिकार्ड तोड़ दिया है। विलियमसन ने हेमिल्टन टेस्ट की दूसरी पारी में शानदार शतक लगाया। विलियमसन अब टेस्ट शतकों की तादाद 32 हो गयी है। पिछली 12 पारियों में इस खिलाड़ी ने 7 शतक लगाये हैं। इस प्रकार टेस्ट क्रिकेट में सबसे तेज 32 शतक तक पहुंचने के मामले में उन्होंने सभी को पीछे छोड़ दिया है। ऑस्ट्रेलिया के स्टीव स्मिथ ने सबसे तेजी से 174 पारियों में ये आंकड़ा हासिल किया था और वह दूसरे नंबर पर हैं जबकि विलियमसन ने 172 पारियों में ही यह रिकार्ड बना दिया। वहीं ऑस्ट्रेलिया के रिकी पोंटिंग इस मामले में तीसरे नंबर पर हैं। उन्होंने 176 पारियों में ये उपलब्धि हासिल की थी जबकि तेंदुलकर ने 179 पारी खेलने के बाद 32वां टेस्ट शतक जमाया था। विलियम्सन ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट सीरीज में 118, 109, 43 और 105 रन बनाये।

डकेट के तेज शतक से इंग्लैंड का ठोस जवाब, दो विकेट पर 207 रन बनाये

राजकोट।

ओपनर बेन डकेट के तेज शतक से इंग्लैंड ने तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच के दूसरे दिन अच्छी बल्लेबाजी करते हुए अपनी पहली पारी में दो विकेट पर 207 रन बनाये। दूसरे दिन का खेल समाप्त होने के समय डकेट नाबाद 133 रन जबकि जो रूट नौ रन बनाकर खेल रहे थे।

वहीं इससे पहले भारतीय टीम अपनी पहली पारी में 445 रनों पर आउट हो गयी थी। इस प्रकार मेहमान टीम अभी भारतीय टीम से 238 रन पीछे है। तीसरे दिन के खेल में डकेट ने अपनी आक्रामक बल्लेबाजी से सबको प्रभावित किया। उन्होंने 88 गेंदों पर ही शतक लगा दिया और भारतीय गेंदबाजों को कोई अवसर नहीं दिया। डकेट दिन का खेल समाप्त होने के समय 118 गेंद में 21 चौकों और दो छक्कों की मदद से नाबाद 133 रन बनाकर खेल रहे थे। उन्होंने जैक क्राउली 15 के साथ पहले विकेट के लिए 89 और ओली पोप 39 रनों के साथ दूसरे विकेट के लिए 93 रन बनाये।

इससे पहले भारतीय टीम ने अपना पहला टेस्ट खेल रहे ध्रुव जुरेल 46 रन और अश्विन 37 रन के बीच आठवें विकेट की 77 रन की साझेदारी से पहली पारी में 445 रन बनाए। वहीं पहले दिन कप्तान रोहित शर्मा ने 131 जबकि रविंद्र जडेजा ने 112 रन बनाये थे। इसके अलावा जसप्रीत बुमराह ने नाबाद 26 और मोहम्मद सिराज ने नाबाद 03 रन बनाये।

वहीं इस मैच में भारतीय टीम के अनुभवी स्पिनर आर अश्विन ने अपने 500 विकेट पूरे किये। इस प्रकार वह पूर्व कप्तान अनिल कुंबले के बाद 500 टेस्ट विकेट हासिल करने वाले दूसरे भारतीय गेंदबाज बने।

अश्विन को यह उपलब्धि हासिल करने के लिए सिर्फ एक विकेट चाहिये थे। उन्होंने जैफ क्राउली को आउट कर अपने 500 विकेट पूरे किये। डकेट ने इंग्लैंड की ओर से तेज शुरुआत करते हुए बुमराह पर चौका लगा दिये। उन्होंने अगले ओवर में दो और चौके लगाये। डकेट ने कुलदीप यादव की गेंदों पर चौके लगार अपना अर्धशतक बनाया। अश्विन ने अपने दूसरे ही ओवर में क्राउली को आउट करके भारत को पहला विकेट दिलाया।

डकेट ने इसके बाद ओली पोप के साथ पारी को आगे बढ़ाना शुरु किया। डकेट ने सिराज पर लगातार दो चौकों के साथ शतक पूरा किया। वह 86 गेंद में सबसे तेज शतक के क्राउली के रिकॉर्ड को तोड़ नहीं पाये। सिराज ने पोप को का विकेट लेकर ये साझेदारी तोड़ी।

इस मैच में आर अश्विन के मैदानी अंपायर से उलझने ओर पिच पर दौड़ने के लिए भारतीय टीम पर जुर्माना लगाया। इससे इंग्लैंड को पांच रन बिना खेले ही मिल गये।

संक्षिप्त समाचार

अश्विन ने पूरे किये 500

राजकोट । भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी भारतीय स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने इंग्लैंड के खिलाफ जारी तीसरे टेस्ट मैच में अपने 500वें विकेट पूरे करने के साथ ही एक अहम उपलब्धि हासिल की है। अश्विन ने खेल के तीसरे सत्र में जैक क्रॉली का विकेट लेने के साथ ही 500 विकेट का आंकड़ा हासिल किया। अश्विन ने 500 विकेट लेने के लिए 25715 गेंदें फेंकीं जबकि पूर्व तेज गेंदबाज ग्लेन मैकग्राथ ने इसके लिए सबसे कम 25528 गेंदें लीं थीं। इसके अलावा अश्विन ने अपने 98वें टेस्ट में ही ये विकेट लिए हैं। कुंबले ने ये रिकार्ड 105 मैचों में बनाया था। अश्विन टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में सबसे तेज 500 विकेट लेने वाले दूसरे और कुल नौवें गेंदबाज हैं। वहीं कुंबले ने 132 टेस्ट मैचों में 619 विकेट हासिल लिए थे और वह इस सूची में दूसरे नंबर पर हैं जबकि 133 खेलों में 800 विकेट के साथ श्रीलंका के मुथैया मुरलीधरन टेस्ट में सबसे अधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं।

पीसीबी ने निदेशक हफीज को हटाया , तेज गेंदबाज राऊफ को भी नहीं दिया केन्द्रीय अनुबंध

लाहौर । पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने तेज गेंदबाज हारिस राऊफ के खिलाफ कड़ी अनुशासनात्मक कार्रवाई करते हुए उन्हें केन्द्रीय अनुबंध से ही बाहर कर दिया है। इसके अलावा पूर्व कप्तान मो हफीज को भी क्रिकेट निदेशक पद से हटा दिया है। राऊफ के खिलाफ ये कदम इसलिए उठाया गया है क्योंकि वह ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट सीरीज से हट गये थे। पीसीबी ने साथ ही कहा कि हारिस को 20 जून 2024 तक किसी भी विदेशी लीग में खेलने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) नहीं दिया जाएगा। पीसीबी ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया के 2023-24 दौरे के लिए पाकिस्तान की टेस्ट टीम के साथ जुड़ने से मना करने के मामले की जांच के बाद ही राउफ को सजा दी गयी है जिससे अन्य खिलाड़ियों को भी सबक मिले। पीसीबी ने कहा , इस मामले से जुड़े सभी हितधारकों के नजरिए पर विचार करने के बाद हारिस के केंद्रीय अनुबंध को एक दिसंबर 2023 से रद्द किया जाता है और 30 जून 2024 तक उसे किसी विदेशी लीग में खेलने के लिए एनओसी भी नहीं दी जाएगी। पीसीबी ने कहा कि उसके प्रबंधन ने 30 जनवरी को हारिस को व्यक्तिगत सुनवाई में अपा पक्ष रखने का मौका दिया था पर उनका जवाब असंतोषजनक रहा। इसके अलावा पीसीबी ने क्रिकेट निदेशक हफीज को भी पद से हटा दिया। पीसीबी ने सोशल मीडिया पर लिखा, पीसीबी हफीज के प्रति उनके अमूल्य योगदान के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता है। खेल के प्रति हफीज के जुनून ने खिलाड़ियों को प्रेरित किया है। टीम का स्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड का दौरा बेहद अहम रहा है। पीसीबी हफीज को उनके भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामनाएं और सफलता देता है।आईसीसी विश्व कप 2023 में टीम के खराब प्रदर्शन के बाद हफीज को पाकिस्तान पुरुष क्रिकेट टीम का निदेशक नियुक्त किया गया गया था पर उनका कार्यकाल बेहद छोटा रहा।

हम वही करना चाहते हैं जो हमने पिछले साल किया था: हरमनप्रीत कौर

मुंबई,

'दबाव न लें', 'चीजों को सरल रखें', और 'अपनी और एक-दूसरे की सफलता का आनंद लें', सरल कीवर्ड, अक्सर विशिष्ट खेलों में उछाले जाते हैं, लेकिन ये वे स्तंभ थे जिन्होंने मुंबई इंडियंस का निर्माण किया। महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के उद्घाटन सत्र में खिताब जीतने का अभियान। बेंगलुरु के चिन्नास्वामी स्टेडियम में दूसरे सीज़न का पहला मैच (23 फरवरी) शुरू होने में ठीक एक हफ्ते का समय बचा है और मुंबई इंडियंस की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने शुक्रवार को मुंबई में प्री-सीज़न प्रेस कॉन्फ्रेंस में यही बात दोहराई। हरमनप्रीत ने कहा, हम बस वही करना चाहते हैं जो हमने पिछले साल किया था, चीजों को सरल रखें और अपने क्रिकेट का आनंद लें। हम उम्मीद करते हैं कि सभी खिलाड़ियों को स्पष्ट भूमिकाएँ दी जाएँ ताकि वे वहाँ जाकर प्रदर्शन कर सकें। मुझे पता है कि इस बार बहुत सारी निगाहें हम पर होंगी क्योंकि हमने पिछले साल जीत हासिल की थी, लेकिन पिछले साल भी हमने खुद पर कोई दबाव नहीं डाला था। हम एक समान माहौल बनाने की कोशिश करेंगे, एक-दूसरे की सफलता का आनंद लेंगे और एक-दूसरे का समर्थन करेंगे। यह हमारे कोचों के बारे में सबसे अच्छी बात है। उनका समर्थन बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। चार्लोट एडवर्ड्स, एमआई की मुख्य कोच, और झूलन गोस्वामी, एमआई की मेंटर और बॉलिंग कोच, महिलाओं के खेल के दो प्रमाणित दिग्गजों ने समान रूप से मजबूत कोचिंग माहौल बनाने के लिए हाथ मिलाया है।चार्लोट ने कहा, हमने 12 महीने पहले टीम चुनी थी, और खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ के समूह के लिए यह कितना अद्भुत अनुभव था। उस ट्रॉफी को उठाना, जैसा कि हरमन ने उस रात ब्रेबॉर्न स्टेडियम में किया था, मेरे करियर के मुख्य आकर्षणों में से एक होगा। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन लोगों के साथ हमने यह किया, सभी युवाओं के साथ। यह एक अविश्वसनीय समय था।

झूलन के साथ काम करने के लिए। उसने मुझे कई बार आउट किया और वह मुझे इसकी बहुत याद भी दिलाती है। आख़िरकार उनके साथ काम करना और एक ही टीम में रहना बहुत अच्छा था। गोस्वामी ने एडवर्ड्स के साथ मिलकर काम करने के बारे में कहा, चार्लोट और मैं बहुत सी चीजों पर चर्चा करने की कोशिश करते हैं। यहां तक कि जब हम दोनों व्यस्त होते हैं, तब भी हम संपर्क में रहने की कोशिश करते हैं। वह पूरी तरह से पेशेवर रही है, मैंने उससे बहुत कुछ सीखा है और उसके साथ हर पल का आनंद लेती हूं। ईमानदारी से कहूं तो, एक गेंदबाजी कोच के रूप में यह मेरा पहला काम है और मैंने उनसे मैदान के अंदर और बाहर बहुत कुछ सीखा है। मैं एमआई

में स्काउटिंग प्रणाली से चकित हो गई हूं। इस भूमिका में आकर मुझे इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। मैं बस इतना जानती थी कि एमआई वास्तव में इसमें अच्छा था। नीलामी से ठीक पहले स्काउट्स को एक्शन में देखना कड़ी मेहनत का प्रमाण था। हमने इसी वजह से चार खिलाड़ियों को अनुबंधित किया है। उम्मीद है, हम अगले भविष्य के सितारे का पता लगा सकते हैं, जो बहुत रोमांचक है। ऐसे दो युवा खिलाड़ी, यास्तिका भाटिया, 2023 की उभरती खिलाड़ी, और इस्सी वोंग, डब्ल्यूपीएल में हैट्रिक लेने वाले पहली खिलाड़ी, पिछले साल एमआई के खिताब की दौड़ में महत्वपूर्ण थीं। यास्तिका ने किरण मोरे के उनके करियर पर प्रभाव के बारे में भावुकता से बात की और कैसे उनके साथ प्रशिक्षण से बदलाव आया। मुंबई इंडियंस और दिल्ली कैपिटल्स 23 फरवरी को 2023 फाइनल के रीप्ले में डब्ल्यूपीएल के दूसरे सीज़न की शुरुआत करेंगे।

जडेजा ने कपिल , अश्विन के साथ विशेष क्लब में जगह बनायी

राजकोट ।

भारतीय क्रिकेट टीम के ऑलराउंडर रवींद्र जड़ेजा ने इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच में एक अहम उपलब्धि हासिल की है। इस मैच में अपने शानदार प्रदर्शन के बल पर जडेजा ने एक विशेष सूची में अपनी जगह बना ली है। अब वह टेस्ट में 3000 से अधिक रन और 250 से अधिक विकेट लेने वाले तीसरे भारतीय खिलाड़ी बन गए हैं। वहीं भारतीय टीम के पूर्व कप्तान कपिल देव के 131 मैचों में 5,248 रन और 434 विकेट हैं और वह इस सूची में शीर्ष पर हैं। अश्विन ने अब तक 98 मैचों में 3,271 रन बनाने के साथ ही 499 विकेट भी लिए हैं और वह दूसरे नंबर पर है जबकि जडेजा ने अब तक 70 मैचों में 3003 रन बनाए हैं और 280 विकेट लिए हैं और वह तीसरे नंबर पर हैं। जडेजा ने तीसरे टेस्ट में शतकीय पारी खेलकर भारतीय टीम को बेहतर स्कोर बनाने में भी सहायता की। उनकी कप्तान रोहित शर्मा के साथ शतकीय साझेदारी हुई।

अश्विन की गलती से भारतीय टीम पर लगा जुर्माना

राजकोट ।

भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी स्पिनर आर अश्विन यहां इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच के दूसरे दिन अंपायर से उलझ गये। इस कारण भारतीय टीम पर जुर्माना लगा है। अश्विन इस मैच में बल्लेबाजी करते समय मैदानी इंपायर से उलझ गए और इससे पूरी टीम को नुकसान उठाना पड़ा। भारतीय टीम पर इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे क्रिकेट टेस्ट के दौरान उसके बल्लेबाजों के पिच के बीच में दौड़ने की दूसरी गलती के लिए पांच रन का जुर्माना लगाया गया। ऐसे में अब इंग्लैंड को अपनी पारी की शुरुआत से पहले ही पांच रन मिल जाएंगे। अश्विन के पिच के बीच में दौड़ने के कारण भारत पर ये जुर्माना लगाया गया है। इस मामले में मैदानी अंपायर जोएल विल्सन ने अश्विन को फटकार भी लगाई। दूसरे दिन के खेल के दौरान भारतीय पारी के 102वें ओवर की तीसरी गेंद के बाद अंपायन ने पिच के बीच में दौड़ने के लिए अश्विन को चेतावनी भी दी थी। इससे पहले रविंद्र जडेजा ने भी पहले दिन के खेल के दौरान ऐसा किया था। अश्विन ने रेहान अहमद की गेंद को खेला और बिना यह समझे कि वह कहां दौड़ रहे हैं तुरंत एक रन लेने के लिए दौड़ पड़े। अश्विन से पहले अंपायरों ने टेस्ट के पहले दिन जडेजा को भी पिच के बीच में दौड़ने के को लेकर फटकार लगायी थी। . एमसीसी के नियम के अनुसार 'पिच को जानबूझकर या जिससे बचा जा सकता है वह नुकसान पहुंचाना गलत है। यदि स्ट्राइकर गेंद को खेलते हुए सुरक्षित क्षेत्र में प्रवेश करता है तो उसे इसके तुरंत बाद वहां से हटना होता है।'' नियम के अनुसार 'यदि कोई अंपायर मानता है कि पिच पर उसकी उपस्थिति कारणों के बिना है तो बल्लेबाज को जिस क्षति से बचा जा सकता था उसे पहुंचाने वाला माना जाएगा।'

ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म कंपनी ड्रीम 11 मुश्किल में फंसी

7.6 करोड़ रुपये किराया नहीं देने के आरोप

नई दिल्ली । ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म कंपनी ड्रीम 11 मुश्किल में फंस गयी है। उसके खिलाफ 7.6 करोड़ रुपये किराया न देने का आरोप लगा है। इस मामले में नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल (एनसीएलटी) ने ड्रीम 11 की मूल कंपनी स्पोर्टा टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड के खिलाफ दिवालिया याचिका को स्वीकार भी कर लिया है। इस कंपनी पर 9 फरवरी को 7.6 करोड़ रुपये किराया नहीं देने के कारण ये कार्रवाई हुई हालांकि इसके बाद एनसीएलटी ने स्पोर्टा टेक्नोलॉजीज के खिलाफ दिवाला समाधान प्रक्रिया शुरू करने के आदेश पर रोक भी लगा दी। वहीं अपीलीय न्यायाधिकरण ने ड्रीम11 का बोर्ड ऑफ डायरेक्टर भंग किए जाने के बाद नियुक्त अंतरिम समाधान पेशेवर (आईआरपी) को अगली सुनवाई तक कोई कदम न उठाने के भी निर्देश दिये हैं। इस इसकी सुनवाई 23 फरवरी को होगी। गौरतलब है कि ड्रीम11 आईपीएल टी20 क्रिकेट लीग की मुख्य प्रायोजक है। वहीं इससे पहले स्पोर्टा टेक्नोलॉजीज ने एनसीएलटी की मुंबई पीठ के फैसले को चुनौती दी थी। कंपनी के सह-संस्थापक एवं मुख्य परिचालन अधिकारी भावित सेठ ने यह याचिका दायर की थी। इस याचिका की सुनवाई करते हुए अपीलीय न्यायाधिकरण की 3 सदस्यीय पीठ ने स्पोर्टा टेक्नोलॉजीज के आईआरपी और रिवॉर्ड बिजनेस सॉल्यूशन के समाधान पेशेवर को नोटिस जारी किया और उन्हें एक सप्ताह के भीतर जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। इस कार्यवाही के दौरान स्पोर्टा टेक्नोलॉजीज के वकील ने एनसीएलटी के नौ फरवरी को पारित आदेश पर रोक लगाने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि आईपीएल टूर्नामेंट नजदीक आ रहा है और इस आदेश का असर आने वाले सत्र की तैयारियों पर पड़ेगा। वहीं एनसीएलटी ने परिचालन कर्जदाता रिवॉर्ड सॉल्यूशंस की तरफ से दायर 7.61 करोड़ रुपये के बकाया के दावे की याचिका पर ड्रीम 11 के खिलाफ दिवाला समाधान प्रक्रिया शुरू करने का निर्देश दिया था।

एफआईएच प्रो लीग में भारतीय पुरुष हॉकी टीम को ऑस्ट्रेलिया ने 4-6 से हराया

भुवनेश्वर।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम को एफआईएच प्रो लीग में ऑस्ट्रेलिया के हाथों 4-6 से हार का सामना करना पड़ा है। इस मैच में भारतीय टीम की ओर से कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने दो गोल किये पर वह भारतीय टीम को हार से नहीं बचा पाये। भारतीय टीम इस मैच में अंतिम क्वार्टर में गोल करने में अवसरों को गोल में बदलने में असफल रही जिससे भी उसे नुकसान हुआ। भारतीय टीम की ओर से हरमनप्रीत ने 12वें और 20वें मिनट में दो गोल पेनल्टी कॉर्नर से किये। वहीं सुखजीत सिंह ने 18वें और मंदीप सिंह ने 29वें मिनट में एक-एक मैदानी गोल किया। ऑस्ट्रेलियाई टीम की ओर से ब्लेक गोवर्स ने दूसरे मिनट में ही दो गोल दाग कर अपनी टीम को बढ़त दिलायी। इसके बाद अरान जालेवस्की ने 40वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर से जबकि लाचलान शार्प ने 52वें मिनट में एक गोल किया। जैकब एंडरसन ने 55वें और जैक वेल्च ने 58वें मिनट में एक-एक मैदानी गोल दागकर अपनी टीम को जीत दिलाई। 12वें मिनट में भारत को पहला पेनल्टी कॉर्नर मिला जिसे हरमनप्रीत ने गोल में बदल दिया। इस गोल से भारतीय खिलाड़ियों का मनोबल तेजी से बढ़ गया और वे खेल पर हावी हो गये। इसके बाद भारतीय टीम की ओर से सुखजीत ने 18वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर से गोल किया। दो मिनट बाद हरमनप्रीत ने एक और पेनल्टी कॉर्नर पर गोल कर भारत को आगे कर दिया और हाफ टाइम से एक मिनट पहले मंदीप ने एक मैदानी गोल कर टीम को 4-2 से बढ़त दिला दी। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया टीम ने आक्रामक खेल दिखाकर चार गोल दागकर मैच जीता लिया।

फिक्सिंग मामले में क्लब क्रिकेटर रिजवान जावेद पर 17 साल का प्रतिबंध

दुबई ।

इंग्लैंड के क्लब क्रिकेटर रिजवान जावेद पर मैच फिक्सिंग मामले में दोषी पाये जाने पर 17 साल का प्रतिबंध लगा दिया गया है। इससे एक प्रकार से रिजवान का करियर ही समाप्त हो गया है। रिजवान को साल 2021 में अबुधाबी टी10 लीग के दौरान मैच फिक्स करने के कई प्रयासों के कारण साढ़े 17 साल के लिए सभी तरह के क्रिकेट से बाहर कर दिया गया गया था। इस मामले में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के 'इंटीग्रिटी' महाप्रबंधक एलेक्स मार्शल ने कहा, 'रिजवान पर पेशेवर क्रिकेटरों को भ्रष्टाचार में शामिल करने के गंभीर प्रयासों के लिए इतना लंबा प्रतिबंध लगाया गया है।' इसके साथ ही बयान में कहा गया, 'इस प्रतिबंध से किसी भी स्तर पर क्रिकेट में फिक्सिंग का प्रयास कर रहे लोगों को एक कड़ा संदेश जाएगा कि खेल को भ्रष्ट करने के किसी भी प्रयास को सहन नहीं किया जाएगा।' अबुधाबी टी10 लीग साल 2017 में शुरू की गई थी। गौरतलब है कि रिजवान उन 8 खिलाड़ियों और अधिकारियों में से एक हैं जिनपर पिछले साल सितंबर में आरोप लगे थे। वहीं इससे पहले बांग्लादेश के ऑराउंडर नासिर हुसैन पर भी ऐसे ही आरोप लगे थे और उनपर भी दो साल का प्रतिबंध लगाया गया था। रिजवान 2021 अबुधाबी टी10 क्रिकेट लीग में फिक्सिंग को लेकर आरोपों का जवाब देने में असफल रहे थे जिसके बाद उन पर प्रतिबंध लगाया गया जो 19 सितंबर 2023 से शुरू होगा। रिजवान पर भ्रष्टाचार रोधी संहिता के विभिन्न अनुच्छेदों के अंतर्गत प्रतिबंध लगाया गया है जिसमें अनुच्छेद 2.1.1 , अनुच्छेद 2.1.3, अनुच्छेद 2.4.4 और अनुच्छेद 2.4.6 शामिल है। रिजवान अपने ऊपर लगे आरोपों का जवाब देने में विफल रहे।

एक जुलाई से शुरू होगा लंका प्रीमियर लीग का पांचवां संस्करण

कोलंबो। बहुप्रतीक्षित लंका प्रीमियर लीग (एलपीएल) का पांचवां संस्करण इस साल 1 जुलाई से 31 जुलाई तक आयोजित किया जाएगा। श्रीलंका क्रिकेट (एसएलसी) बोर्ड ने शुक्रवार को इसकी घोषणा की।मेजर लीग क्रिकेट (एमएलसी) और द हंड्रेड के साथ ओवरलैप एलपीएल 2024 के लिए एक संभावित चुनौती है। एमएलसी का दूसरा सीजन 4 जुलाई से शुरू हो रहा है और द हंड्रेड 23 जुलाई से 18 अगस्त खेला जाएगा। इसलिए, एलपीएल को कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। खिलाड़ियों की भागीदारी के लिए प्रतिद्वंद्वी लीगों की होड़ के बीच शीर्ष स्तरीय अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभा को आकर्षित करने का कार्य। पिछले साल इसी तरह के शेड्यूलिंग टकराव का सामना करने के बावजूद, जिसने विदेशी खिलाड़ियों को सुरक्षित करने की इसकी क्षमता को प्रभावित किया था। एलपीएल अपने रोमांचक क्रिकेट एक्शन से स्थानीय दर्शकों को लुभाने में कामयाब रहा है। एलपीएल का समृद्ध इतिहास एक अलग नाम वाली एक ही टीम के प्रभुत्व से रेखांकित होता है। जाफना स्टालोंस ने पहला सीज़न जीता और जाफना किंग्स ने थिसारा परेरा के नेतृत्व में दूसरे और तीसरे संस्करण में जीत हासिल की। हालांकि, 2023 सीज़न में बी-लव कैंडी के रूप में एक नया चैंपियन उभरा, जिसकी कप्तानी वानिंदु हसरंगा ने की, जो लीग के प्रतिस्पर्धी परिदृश्य में बदलाव का प्रतीक है। 2024 सीजन एक और रोमांचक तमाशा पेश करने का वादा करता है, जिसमें महीने भर चलने वाले टूर्नामेंट में 24 मैचों में पांच टीमें प्रतिस्पर्धा करेंगी। 20 मैचों वाले लीग चरण के बाद प्लेऑफ का फॉर्मेट आईपीएल से मेल खाता है, जिसमें क्वालीफायर, एलिमिनेटर, दूसरा एलिमिनेटर और फाइनल मैच शामिल है।

जनवरी में उड़ानों की देरी से पांच लाख यात्री प्रभावित हुए: डीजीसीए

मुंबई ।

इस साल जनवरी में उड़ानों में देरी होने से 4.82 लाख यात्रियों पर असर पड़ा है, जिसके मुआवजे के तौर पर एयरलाइन कंपनियों को 3.69 करोड़ रुपये का भुगतान करना पड़ा। मासिक हवाई यातायात आंकड़ों से यह जानकारी सामने आई है। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) की तरफ से जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक जनवरी में घरेलू यात्रियों की संख्या पिछले साल के इसी महीने की तुलना में 4.69 प्रतिशत बढ़कर 1.31 करोड़ हो गई। जनवरी, 2023 में घरेलू यात्री यातायात 1.25 करोड़ रहा था। आंकड़ों के अनुसार पिछले महीने उड़ानों में देरी के अलावा विभिन्न एयरलाइंस ने 1,374 यात्रियों को विमान में सवार होने से रोक दिया था।

इसकी वजह से वैकल्पिक उड़ानों के इंतजाम और ठहरने एवं खानपान सुविधा देने पर 1.28 करोड़ रुपये खर्च हुए। डीजीसीए के आंकड़ों के मुताबिक जनवरी में उड़ानों के रद्द होने पर एयरलाइंस ने 68,362 यात्रियों को रिफंड और दोबारा बुकिंग की पेशकश के साथ 1.43 करोड़ रुपये भी हर्जाने के तौर पर दिए। घरेलू यात्री यातायात के मोर्चे पर पिछले महीने इंडिगो ने 79.09 लाख यात्रियों के साथ 60.2 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी हासिल की। इसके बाद 15.97 लाख यात्रियों के साथ एयर इंडिया की 12.2 प्रतिशत हिस्सेदारी रही।

ब्लूस्टोन ज्वैलरी अपना आईपीओ जल्द लाएगी

नई दिल्ली ।

टाटा समूह के अध्यक्ष रतन टाटा और ज़ेरोधा के सह-संस्थापक निखिल कामथ के निवेश वाली ज्वेलरी कंपनी स्टोन ज्वैलरी अपना आईपीओ लाने पर विचार कर रही है। इस आईपीओ के माध्यम से कंपनी ने लगभग 2,000 करोड़ जुटाने की योजना बनाई है। ऑनलाइन-फर्स्ट ज्वैलर आईपीओ के लिए निवेश बैंकरों से प्रस्ताव मांग रहा है, जिसमें 10-15 प्रतिशत हिस्सेदारी को कम करने की संभावना है, जिसमें शेयरों का एक नया मुद्दा और बिक्री के लिए प्रस्ताव (ओएफएस) शामिल है। बताया जा रहा है कि कंपनी ने शुरुआत में 2022 में सार्वजनिक होने की योजना बनाई थी, लेकिन योजनाओं को स्थगित कर दिया और इसके बजाय निजी इक्विटी (पीई) फर्मों से धन जुटाया। पिछले साल ब्लूस्टोन ने निखिल कामथ, रंजन पई, अमित जैन, दीपिंदर गोयल और 360 वन जैसे पुराने और नए निवेशकों से मिलकर 550 करोड़ का निवेश आकर्षित किया, जिससे शुद्ध मूल्यांकन 440 मिलियन के करीब पहुंच गया। रिपोर्ट के अनुसार, हीरो एंटरप्राइज के सुनील कांत मुंजाल के नेतृत्व में 2022 में 30 मिलियन डॉलर के फंडिंग राउंड के बाद कंपनी का मूल्य 410 मिलियन डॉलर आंका गया। टाइटन के तनिष्क ब्रांड, कल्याण ज्वैलर्स और नव सार्वजनिक सेनको गोल्ड जैसे सूचीबद्ध दिग्गजों के साथ, ब्लूस्टोन खुद को उद्योग में एक अग्रणी दावेदार के रूप में स्थापित कर रहा है। सेनको इस क्षेत्र की नवीनतम सूचीबद्ध इकाई, वर्तमान में 5,908 करोड़ के मूल्यांकन पर कारोबार कर रही है, जो पिछले साल जुलाई में इसके आईपीओ मूल्य से 141 प्रतिशत प्रीमियम है। वर्तमान में ब्लूस्टोन के देश भर में 180 से अधिक बिक्री केंद्र हैं और यह 8,000 से अधिक अद्वितीय आभूषण डिजाइनों की एक विस्तृत सूची प्रदान करता है। कंपनी की मुंबई, जयपुर और अन्य स्थानों पर आभूषण निर्माण इकाइयां हैं।

कच्चे तेल में तेजी, पेट्रोल और डीजल भी महंगा

- ब्रेंट क्रूड का भाव करीब 1 डॉलर बढ़कर 82.86 डॉलर प्रति बैरल

नई दिल्ली ।

वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में एक बार फिर गिरावट आने के बाद शुक्रवार को 1 डॉलर से ज्यादा का उछाल दिख रहा है। इसका असर शुक्रवार को सरकारी तेल कंपनियों की ओर से जारी पेट्रोल-डीजल की कीमतों पर भी दिख रहा है। शुक्रवार को यूपी, बिहार और पंजाब सहित देश के तमाम राज्यों में तेल की कीमतों में बदलाव हुआ है। हालांकि, दिल्ली-मुंबई जैसे देश के चारों महानगरों में कीमतें स्थिर बनी हुई हैं। सरकारी तेल कंपनियों के अनुसार पंजाब के अमृतसर में पेट्रोल 18 पैसे महंगा होकर 98.44 रुपये लीटर हो गया है। यहां डीजल भी 17 पैसे चढ़ा और 88.76 रुपये लीटर बिक रहा है। यूपी मेरठ में पेट्रोल 23 पैसे महंगा होकर 96.46 रुपये लीटर तो डीजल 22 पैसे चढ़कर 89.64 रुपये लीटर हो गया है। इसके अलावा बिहार के गया शहर में पेट्रोल 30 पैसे सस्ता हुआ और 108.31 रुपये लीटर पहुंच गया है, जबकि डीजल 27 पैसे गिरावट के साथ 95.04 रुपये लीटर बिक रहा है। ग्लोबल मार्केट में एक दिन पहले सस्ता हुआ क्रूड ऑयल फिर 1 डॉलर से ज्यादा के उछाल पर है। ब्रेंट क्रूड का भाव करीब 1 डॉलर बढ़कर 82.86 डॉलर प्रति बैरल हो गया है। डब्ल्यूटीआई भी बढ़त के साथ 78.11 डॉलर प्रति बैरल के भाव पहुंच गया है। दिल्ली पेट्रोल 96.72 रुपये और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर, मुंबई पेट्रोल 106.31 रुपये और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल 92.76 रुपये प्रति लीटर, अमृतसर में पेट्रोल 98.44 रुपये और डीजल 88.76 रुपये प्रति लीटर हो गया है। मेरठ में पेट्रोल 96.46 रुपये और डीजल 89.64 रुपये प्रति लीटर हो गया है। गया में पेट्रोल 108.31 रुपये और डीजल 95.04 रुपये प्रति लीटर हो गया है।

इंडिया यामाहा मोटर तीन लाख स्कूटर वापस मंगाएगी

नई दिल्ली ।

इंडिया यामाहा मोटर ब्रेक के कलपुर्जे को ठीक करने के लिए अपने 125 सीसी स्कूटर मॉडल रे जेडआर 125 एफआई हाइब्रिड और फैसिनो 125 एफआई हाइब्रिड की लगभग तीन लाख इकाइयां वापस मंगाएगी। दोपहिया वाहन बनाने वाली जापान की कंपनी ने कहा कि वह एक जनवरी, 2022 से चार जनवरी, 2024 के बीच विनिर्मित स्कूटर इकाइयों को तत्काल प्रभाव से वापस मंगा रही है। कंपनी ने कहा कि वह उत्पादों की उच्च गुणवत्ता और सुरक्षा मानक को लेकर प्रतिबद्ध है। इसी के तहत इंडिया यामाहा मोटर (आईवाईएम) ने स्वैच्छिक रूप से 125 सीसी के स्कूटरों की लगभग 3,00,000 इकाइयों को वापस मंगाने की घोषणा की है। बयान के अनुसार वाहन वापस मंगाने का उद्देश्य रे जेडआर 125 एफआई हाइब्रिड और फैसिनो 125 एफआई हाइब्रिड स्कूटर मॉडल (जनवरी 2022 के बाद के मॉडल) की चुनिंदा इकाइयों में ब्रेक लीवर के काम करने से जुड़ी समस्या का हल करना है। आईवाईएम ने कहा कि संबंधित ग्राहकों को कलपुर्जे मुफ्त उपलब्ध कराए जा रहे हैं। ग्राहक वाहन वापस मंगाये जाने की पात्रता के बारे में जानने के लिए कंपनी की वेबसाइट के सेवा अनुभाग पर जा सकते हैं और अपने चेसिस नंबर का विवरण दर्ज कर सकते हैं। इसके अलावा ग्राहक मदद के लिए समीप के यामाहा सेवा केंद्र पर जा सकते हैं।

पेटीएम पेमेंट्स बैंक अब 15 मार्च तक स्वीकार कर सकेगा जमा

मुंबई।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने पेटीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड के जमा स्वीकार करने पर रोक लागू करने की समय सीमा 15 दिन बढ़ा दी है। अब रोक 1 मार्च की जगह 16 मार्च से प्रभावी होगी। आरबीआई ने कहा कि पीपीबीएल के ग्राहकों (व्यापारियों सहित) के हितों को ध्यान में रखते हुए समय सीमा बढ़ाई गई है। आरबीआई के आदेश में कहा गया है, ÷15 मार्च 2024 के बाद किसी भी ब्याज, कैशबैक, पार्टनर बैंकों से स्वीप इन या रिफंड के अलावा किसी भी ग्राहक खाते, प्रीपेड उपकरण, वॉलेट, फास्टैग, नेशनल कॉमन मोबिलिटी कार्ड आदि में कोई और जमा या क्रेडिट लेनदेन या टॉपअप की अनुमति नहीं दी जाएगी (29 फरवरी, 2024 की पूर्व निर्धारित समयसीमा से विस्तारित)। पहले 31 जनवरी को जारी आदेश के अनुरूप, इसके ग्राहकों द्वारा बचत बैंक खाते, चालू खाते, प्रीपेड उपकरण, फास्टैग, नेशनल कॉमन मोबिलिटी कार्ड आदि सहित अपने खातों से शेष राशि की निकासी या उपयोग की अनुमति उनके उपलब्ध शेष तक बिना किसी प्रतिबंध के होगी। फंड ट्रांसफर जैसी बैंकिंग सेवाएं (एईपीएस, आईएमपीएस इत्यादि जैसी सेवाओं के नाम और प्रकृति के बावजूद), बीबीपीओयू और यूपीआई सुविधा बैंक द्वारा 15 मार्च 2024 के बाद भी प्रदान की जाएगी। हालाँकि, ग्राहकों या वॉलेट धारकों द्वारा उपलब्ध शेष राशि की निकासी या उपयोग के उद्देश्य से, एईपीएस, आईएमपीएस और यूपीआई सहित ऐसे फंड ट्रांसफर की अनुमति किसी भी समय दी जा सकती है।

कार्लाइल ने यस बैंक में 1.3 फीसदी हिस्सेदारी बेची

नई दिल्ली । वैश्विक निवेश फर्म द कार्लाइल ग्रुप ने खुले बाजार लेनदेन के जरिये निजी क्षेत्र के ऋणदाता यस बैंक में 1,057 करोड़ रुपये में अपनी 1.3 प्रतिशत हिस्सेदारी बेच दी है। अमेरिका के समूह ने अपने सहयोगी सीए बास्क इन्वेस्टमेंट्स के माध्यम से बीएसई पर निजी क्षेत्र के ऋणदाता यस बैंक के 39 करोड़ शेयर बेचे। बीएसई पर उपलब्ध सौदे के आंकड़ों के अनुसार सीए बास्क इन्वेस्टमेंट्स ने यस बैंक में 1.35 प्रतिशत हिस्सेदारी के बराबर 39 करोड़ शेयर बेचे। प्रत्येक शेयर का निपटान औसतन 27.10 रुपये की कीमत पर किया गया, जिससे सौदे का मूल्य 1,056.90 करोड़ रुपये बैठता है। इस सौदे के बाद कार्लाइल समूह की यस बैंक में हिस्सेदारी 6.43 प्रतिशत से घटकर 5.08 प्रतिशत रह गई है। इस बीच मॉर्गन स्टेनली एशिया सिंगापुर ने यस बैंक में 30.63 करोड़ से अधिक शेयरों का अधिग्रहण किया है, जो 1.06 प्रतिशत हिस्सेदारी के समान है।

भारत का रुख स्वास्थ्य जरूरतों के साथ नवाचार संतुलित करना: रिपोर्ट

नई दिल्ली ।

प्रस्तावित व्यापार समझौतों में बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) और दवा क्षेत्र के मुद्दों पर भारत का रुख सार्वजनिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं के साथ नवाचार को संतुलित करता है। सस्ती दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करता है और जेनेरिक दवा उद्योग के विकास को बढ़ावा देता है। एक रिपोर्ट में यह बात कही गई। शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) की रिपोर्ट के अनुसार मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) में डेटा विशिष्टता और पेटेंट लिंकेज जैसे मुद्दों पर विकसित देशों की मांगों का विरोध करके भारत यह सुनिश्चित करता है कि जेनेरिक दवा निर्माताओं को अधिक बाजार पहुंच मिले और जीवन रक्षक दवाओं की लागत काफी कम हो जाए। जीटीआरआई ने कि` कि भारत का दृष्टिकोण सार्वजनिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं के साथ नवाचार को संतुलित करने, अपने विकासात्मक लक्ष्यों के साथ सरेखित करने के लिए टीआरआईपीएस की मजबूत व्याख्या को अपनाने और विशेष रूप से दवा क्षेत्र में अनुचित एकाधिकार की स्थापना को रोकने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। यह मुद्दा महत्वपूर्ण है क्योंकि विकसित देश हमेशा भारत जैसे विकासशील देशों पर विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार-संबंधित पहलुओं (टीआरआईपी) समझौते के तहत सहमत आईपीआर मामलों को लेकर एफटीए में दबाव बनाते हैं। व्यापार की भाषा में इसे टीआरआईपीएस-प्लस कहा जाता है।

असम को जल्द मिलेगा चिप पैकेजिंग प्लांट: राजीव चंद्रशेखर

नई दिल्ली ।

केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने असम में 25,000 करोड़ रुपये की लागत वाले सेमीकंडक्टर पैकेजिंग संयंत्र का ऐलान करते हुए कहा कि असम को जल्द ही 25,000 करोड़ रुपये का सेमीकंडक्टर पैकेजिंग संयंत्र मिलने वाला है। यह टाटा का प्रस्ताव है, जिसका आकलन किया जाना है। चंद्रशेखर ने हाल ही में गुवाहाटी में डिजिटल इंडिया फ्यूचर स्किल्स समिट में यह बात कही। पिछले साल दिसंबर में असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने राज्य में सेमीकंडक्टर इकाई के लिए टाटा समूह की निवेश योजनाओं का खुलासा किया था। एक्स पर एक पोस्ट में शर्मा ने कहा था, टाटा ग्रुप ने 40,000 करोड़ रुपये के निवेश के साथ असम में सेमीकंडक्टर प्रोसेसिंग संयंत्र के लिए आवेदन किया है। इससे बड़ा बदलाव होगा। निवेश की यह घोषणा पिछले साल अगस्त में राज्य के मंत्रिमंडल द्वारा सेमीकंडक्टर नीति को मंजूरी देने के बाद की गई थी। चंद्रशेखर ने गुवाहाटी में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी तथा नैशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स ऐंड आईटी (एनआईईएलआईटी) के सहयोग से आयोजित डिजिटल इंडिया फ्यूचर स्किल समिट के पहले संस्करण में अपने संबोधन के दौरान यह घोषणा की। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक इस शिखर सम्मेलन में एनआईईएलआईटी और इंटेल, एचसीएल, माइक्रोसॉफ्ट, किंडराइल, आईआईएम रायपुर, आईआईटीएम ग्वालियर, विप्रो और अन्य कंपनियों के बीच 20 से अधिक रणनीतिक सहयोग होंगे।

शेयर बाजार तेजी के साथ बंद

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार शुक्रवार को बढ़त पर बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बाजार में ये उछाल दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही खरीददारी हावी रहने से आया है। इस दौरान एलएंडटी , इन्फोसिस और महिंद्रा एंड महीना के शेयर ऊपर आये।

दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 376.26 अंक करीब 0.52 फीसदी बढ़कर 72,426.64 पर बंद हुआ। सेंसेक्स 72,545.33 के उच्च और 72,218.10 के निचले स्तर तक पहुंचा।

वहीं इसी प्रकार पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 129.95 अंक तकरीबन 0.59 फीसदी बढ़कर 22,040.70 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

आज कारोबार के दौरान सेंसेक्स में विप्रो का शेयर सबसे ज्यादा 4.79 फीसदी बढ़कर सबसे अधिक लाभ के साथ बंद हुआ। इसके अलाव एमएंडएम, एलएंडटी, टाटा मोटर्स, मारुति, इंफोसिस, नेस्ले इंडिया और इंडसइंड बैंक के शेयर भी लाभ में रहे।

वहीं महिंद्रा एंड महिंद्रा के शेयर 5 फीसदी से अधिक बढ़े। इनकी कीमतें 5 फीसदी से ज्यादा बढ़कर 52 सप्ताह के शीर्ष स्तर पर पहुंच गयीं। वहीं दूसरी ओर पावरग्रिड, एसबीआई, रिलायंस, एनटीपीसी और एक्सिस बैंक के शेयर गिरावट के साथ ही बंद हुए।

इससे अलावा बजाज ऑटो और मारुति सूजुकी के शेयर बढ़े हैं। दोनों कंपनियों के शेयरों ने आज 1 साल के रिकॉर्ड तोड़ते हुए जबरदस्त बढ़त दर्ज की। इसके शेयर एनएसई पर 2.72 फीसदी की बढ़त के साथ 8,344 रुपये पर बंद हुए जबकि मारुति के शेयर भी 52 सप्ताह का रिकॉर्ड तड़ते हुए 11,480 रुपये पर पहुंच गए। एशियाई बाजारों में जापान का निक्केई, हांगकांग का हैंग सेंग और दक्षिण कोरिया का कोस्पी लाभ के साथ बंद हुए। वहीं गत दिवस अमेरिकी शेयर बाजार बढ़त के साथ बंद हुए। इससे पहले गत सप्ताह भी बाजार बढ़त पर बंद हुआ था।

इससे पहले आज सुबह कारोबारी दिन बाजार की शुरुआत मजबूत हुई है। एनएसई का निफ्टी 96 अंक बढ़कर 22,000 के पार खुला। हालांकि बाद में थोड़ा लुढ़क कर 21989 के स्तर पर कारोबार करता दिखा। जबकि सेंसेक्स करीब 373 अंक ऊपर खुलकर 72269 के लेवल पर कारोबार करता नजर आ रहा था। बीपीसीएल, एमएंडएम, टाटा मोटर्स, हीरो मोटो और हिंडाल्को के शेयर तेजी के साथ कारोबार करते हुए दिखाई दिए।

भारत ने चीन, वियतनाम से सोलर ग्लास आयात की डंपिंग रोधी जांच शुरू की

नई दिल्ली । भारत ने चीन और वियतनाम से कुछ सोलर ग्लास के आयात के खिलाफ डंपिंग रोधी जांच शुरू की है। वाणिज्य मंत्रालय की जांच शाखा व्यापार उपचार महानिदेशालय (डीजीटीआर) चीन और वियतनाम में बने टेक्सचर्ड टेम्पर्ड कोटेड और अनकोटेड ग्लास की कथित डंपिंग की जांच कर रही है। इस उत्पाद को बाजार में सोलर ग्लास या सोलर फोटोवोल्टिक ग्लास जैसे विभिन्न नामों से भी जाना जाता है। घरेलू उद्योग की ओर से बोरोसिल रिन्यूएबल्स लिमिटेड ने जांच और आयात पर उचित डंपिंग रोधी शुल्क लगाने के लिए आवेदन दायर किया है। अधिसूचना के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा प्रमाणित आवेदन के आधार पर और आवेदक द्वारा डंपिंग तथा घरेलू उद्योग को इससे नुकसान होने के संबंध में आवेदक द्वारा प्रस्तुत प्रथम दृष्टया साक्ष्य से संतुष्ट होने के बाद प्राधिकरण कथित डंपिंग के मामले में डंपिंग रोधी जांच शुरू करता है। इसमें कहा गया कि यदि डंपिंग से घरेलू कंपनियों को वास्तविक क्षति होने की पुष्टि होती है, तो डीजीटीआर आयात पर डंपिंग रोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करेगा। वित्त मंत्रालय शुल्क लगाने के संबंध में अंतिम निर्णय लेगा। सस्ते आयात में वृद्धि के कारण घरेलू उद्योगों को नुकसान हुआ है या नहीं यह निर्धारित करने के लिए देशों द्वारा डंपिंग रोधी जांच की जाती है। जांच में नुकसान की पुष्टि होने पर कोई देश जिनेवा स्थित विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के बहुपक्षीय शासन के तहत ये शुल्क लगा सकता है। चीन समेत विभिन्न देशों से सस्ता आयात रोकने के लिए भारत पहले ही कई उत्पादों पर डंपिंग रोधी शुल्क लगा चुका है।

गोफर्स्ट के लिए स्पाइसजेट के सीएमडी और बिजी बी एयरवेज ने संयुक्त रूप से लगाई बोली

नई दिल्ली ।

स्पाइसजेट के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक और बिजी बी एयरवेज प्राइवेट लिमिटेड ने संयुक्त रूप से नकदी संकट से जूझ रही गोफर्स्ट के लिए बोली लगाई है।

स्पाइसजेट के एक अधिकारी ने बताया कि उसके अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक अजय सिंह ने बिजी बी एयरवेज प्राइवेट लिमिटेड के साथ अपनी व्यक्तिगत क्षमता में बोली लगाई है। अधिकारी ने कहा, नई एयरलाइन के लिए परिचालन भागीदार के रूप में स्पाइसजेट की भूमिका में आवश्यक कर्मचारी, सेवाएँ और उद्योग विशेषज्ञता प्रदान करना शामिल है। इस सहयोग से दोनों वाहकों के बीच तालमेल उत्पन्न होने की उम्मीद है, जिससे बेहतर लागत प्रबंधन, राजस्व वृद्धि और भारतीय विमानन उद्योग के भीतर एक मजबूत बाजार स्थिति होगी। राजस्व विस्तार पर ध्यान देने के साथ, स्पाइसजेट का लक्ष्य अपनी स्थापित बुनियादी ढांचे और परिचालन क्षमताओं का लाभ उठाना है।

रखरखाव, ग्राउंड हैंडलिंग और इंजीनियरिंग जैसे विभिन्न कार्यों में संसाधन आवंटन को अनुकूलित करके, एयरलाइन अधिक दक्षता और लाभ प्राप्त करने की उम्मीद करती है। स्पाइसजेट वर्तमान में एक पुनरुद्धार योजना को अमली जामा पहना रही है, और हाल ही में 744 करोड़ रुपये की पूंजी निवेश की पहली किस्त पूरी की है। कंपनी ने अतिरिक्त 1,000 करोड़ रुपये जुटाने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है।

स्पाइसजेट के पास पहले से ही क्यूआईपी के माध्यम से 2,500 करोड़ रुपये तक जुटाने के लिए वैध शेयरधारक अनुमोदन है, जिससे आगे शेयरधारक अनुमोदन की आवश्यकता समाप्त हो गई है। अजय सिंह ने कहा, ÷मेरा दृढ़ विश्वास है कि गोफर्स्ट में अपार संभावनाएं हैं और इसे स्पाइसजेट के साथ घनिष्ठ तालमेल में काम करने के लिए पुनर्जीवित किया जा सकता है, जिससे दोनों वाहकों को लाभ होगा। घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों पर प्रतिष्ठित स्लॉट, अंतर्राष्ट्रीय यातायात अधिकार और 100 से अधिक एयरबस नियो विमानों के ऑर्डर के अलावा, गोफर्स्ट यात्रियों के बीच एक विश्वसनीय और मूल्यवान ब्रांड है। मुझे इस लोकप्रिय एयरलाइन को पुनर्जीवित करने और पारस्परिक विकास और सफलता के लिए इसकी ताकत का लाभ उठाने के प्रयासों में योगदान देने में खुशी हो रही है।

कॉग्निजेंट के कर्मचारियों की संख्या घटी

- वर्ष 2023 में 7600 लोगों ने छोड़ी कंपनी

मुंबई । कॉग्निजेंट के कर्मचारियों की संख्या 2023 में पिछले वर्ष की तुलना में 7,600 घटकर 347,700 हो गई है। कंपनी की 2023 की वार्षिक रिपोर्ट में यह जानकारी सामने आई है। नैस्डैक-सूचीबद्ध आईटी और आउटसोर्सिंग फर्म है और वित्तीय वर्ष का पालन करती है। कंपनी ने अपनी कुल कर्मचारियों की संख्या 347,700 बताई, जो कि दिसंबर तिमाही 2024 के ओ खिर में सालाना आधार पर 1,100 अधिक थी। कॉग्निजेंट ने बताया कि नौकरी छोड़ने वालों की दर 2022 में 25.6 प्रतिशत की तुलना में 2023 में घटकर 13.8 प्रतिशत हो गई। कम नियुक्ति का यह ट्रेंड कमजोर आर्थिक संकेतकों, बैंकिंग और वित्तीय सेवा क्षेत्र में चल रहे दबाव को` दिखाता है। कंपनी ने अकेले भारत में 4,500 कर्मचारियों की उल्लेखनीय कमी देखी, जिसमें लगभग 3,000 कर्मचारी ऑनसाइट थे। एक रिपोर्ट के अनुसार इसके वर्कफोर्स वितरण में भारत में लगभग 250,000 कर्मचारी, नार्थ अमेरिका में 40,500, कॉन्टिनेंटल यूरोप में 16,300, यूके में 8,500 और अन्य स्थानों पर 28,400 कर्मचारी शामिल हैं। आईटी फर्म ने क्लाइंट ऑफरिंग और आंतरिक संचालन दोनों में जेनएआई सहित एआई-आधारित प्रौद्योगिकियों के बढ़ते उपयोग पर जोर दिया है। हालांकि, रिपोर्ट में यह स्वीकार किया गया कि एआई में प्रगति से कुछ सेवाओं की मांग कम हो सकती है या अफेक्ट प्राइस और शर्तें प्रभावित हो सकती हैं, जिसके कारण कार्यबल में कमी आ सकती है।

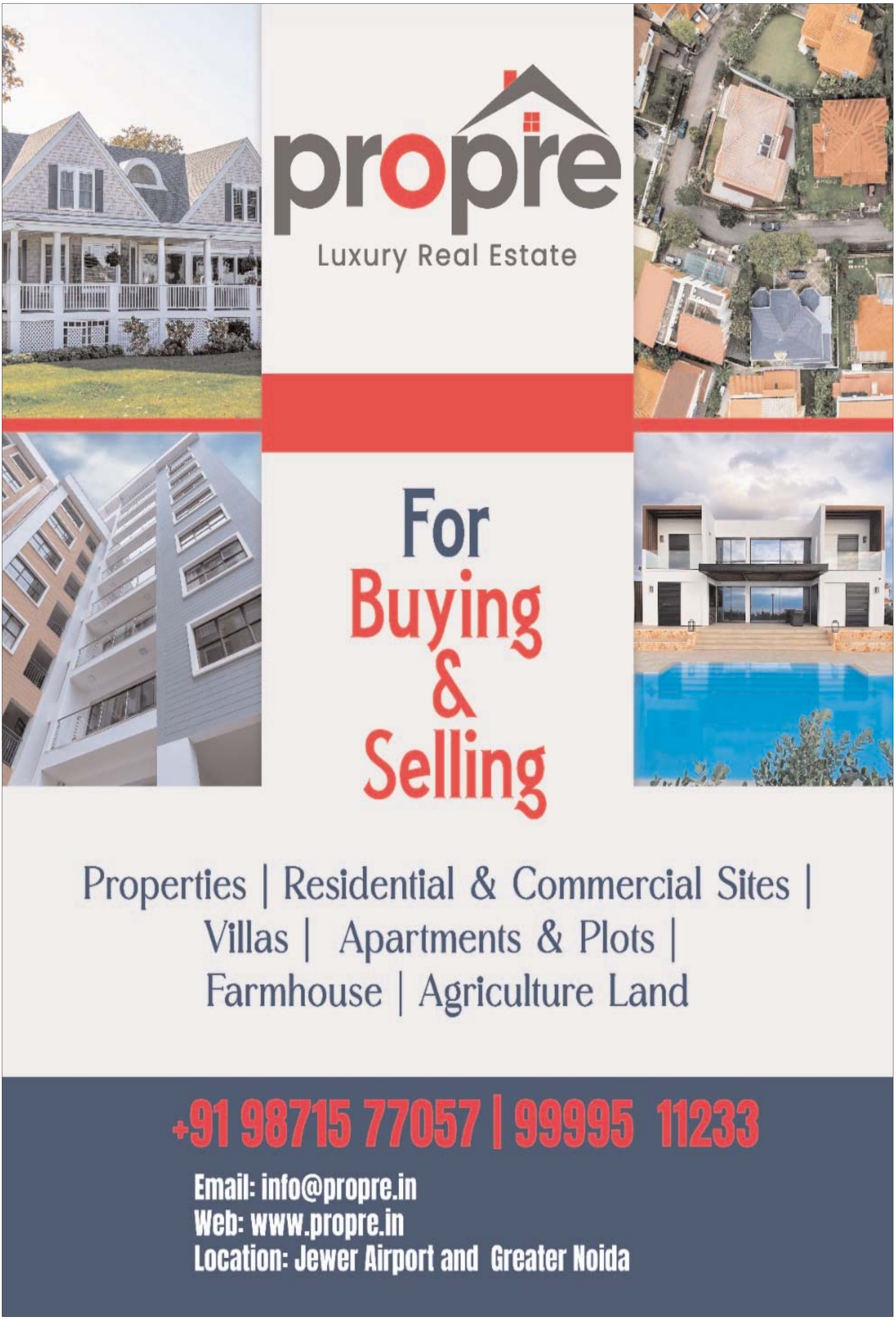

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, राजेश चौधरी द्वारा वत्स ऑफसैट, मुद्दा हाउस, सी. ब्लॉक, बारात घर के सामने, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित तथा ई-189, सेक्टर-63, नोएडा गौतमबुद्धनगर उ.प्र. से प्रकाशित।
संपादकः **जितेन्द्र चौधरी**, आरएनआई नं. UPHIN/2014/55236, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, फोन नं.: 9999511233, ई-मेल : vishalindianews@gmail.com, वेब : www.vishalindia.in